लोक हितम् मम करणीयम्

केशवधाम

वर्ष -1, अंक - 2

केशव प्रभा

हिन्दी षट्मासिक

आत्मवत् सर्वभूतेसु

समरसता अंक

"असाध्य रोगों के निवारण एवं स्वस्थ जीवन हेतु"

केशव प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग संस्थान

केशवधाम, केशवनगर, वृन्दावन जिला-मथुरा 281121

क्या आप जीवन से निराश हो चुके हैं? क्या रोग मुक्ति की कोई आशा नहीं हैं? तो आप जीवन की तमाम व्यस्तताओं में से समय निकालकर प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग का आश्रय लें और निश्चित लाभ प्राप्त करने हेतु पतित पावनी यमुना के तट पर श्री वृन्दावन धाम के सुरम्य वातावरण में निर्मित 'केशवधाम' के अन्तर्गत चलने वाले केशव प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग संस्थान में सुयोग्य चिकित्सकों द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार द्वारा अपनी जीवनी शक्ति को सबल बनाकर सम्पूर्ण शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पाईये। साथ ही जानिए कायाकल्प करने की एक अनूठी पद्धति...

चिकित्सालय में उपलब्ध सुविधायें

1. **महिला/पुरूषों के लिए अलग-अलग उपचार गृह**
2. **रोगानुसार प्राकृतिक भोजन**
3. **मिट्टी चिकित्सा**
4. **जल चिकित्सा**
5. **यौगिक षट्कर्म, योगासन एवं प्राणायाम**
6. **सूर्य किरण चिकित्सा**
7. **रोगानुसार वैज्ञानिक मालिश**
8. **आयुर्वेदिक पंचकर्म क्रियाएं :-** विभिन्न वात रोग जैसे अर्थराइटिस, गठिया, हेतु स्वेदन, स्नेहन, जानुबस्ति, ग्रीवाबस्ति, पत्र पिण्ड स्वेदन एवं शिरोधारा की सुविधा भी उपलब्ध है।

अन्य सुविधाएँ :- ठहरने हेतु (A/c, Non A/c) अटैच्ड रूम, फिजियोथेरापी, एक्यूप्रेशर चुम्बक चिकित्सा, पूर्ण प्राकृतिक वातावरण।

सम्पर्क- केशवधाम, केशवनगर, वृन्दावन (मथुरा) 281121
मो. 7088006633, 9319069105, 9760897937

लोक हितम् मम करणीयम्
केशवधाम

केशव प्रभा

हिन्दी षट्मासिक

संरक्षक मण्डल

श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल
श्री ललित

मार्गदर्शक

मा॰ नारायण दास जी अग्रवाल

प्रधान सम्पादक

डॉ॰ राम सेवक
प्रधानाचार्य
कृष्णचन्द्र गान्धी सरस्वती विद्या मंदिर
इण्टर कॉलेज, माधव कुंज, मथुरा-3

सम्पादक

डॉ. कैलाश द्विवेदी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी
केशव प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग संस्थान
केशव धाम, वृन्दावन, मथुरा

सम्पादक-मण्डल

- ☐ शिशुपाल सिंह
- ☐ राजीव पाठक
- ☐ श्याम प्रकाश पाण्डेय
- ☐ इंजी. वेद आलोक

समरसता विशेषांक

(व्यक्तिगत उपयोग हेतु)

प्रकाशन तिथि
अम्बेडकर जयन्ती

दिनांङ्क
14 अप्रैल 2017

प्रकाशक - केशव धाम, केशव नगर-वृन्दावन (मथुरा) ऊप्र॰
मो. 9319069105, 9412784833, 7088006633

मुद्रक - मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा मो. 9927726600

पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं हैं। गैर व्यावसायिक इस पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं। न्यायिक क्षेत्र मथुरा है।

संपादकीय

ज्ञान को व्यवहार के धरातल पर लाने से
समरसता की गंगा निर्मल होगी। - डॉ. रामसेवक

सामाजिक समरसता राष्ट्र की जीवनी शक्ति है। यदि यह कमजोर होगी तो स्वाभाविक रूप से राष्ट्र कमजोर होकर विनाश की ओर चला जाएगा। इस विचार को हृदयंगम करके हमारे पूर्वजों ने मन, वचन, कर्म से सामाजिक समरसता को जीवित रखने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किए। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का जीवन हमारे लिए अतीव प्रेरणादायी है। शबरी के घर जूठे बेर खाना, निषादराज को आत्मीयता पूर्वक गले लगाना, वनवासी समाज में उनके उत्थान के लिए उन्हीं के मध्य रहना आदि-आदि। देवकी-नन्दन द्वारा कुबड़ी दासी एवं नरसी मेहता की अनन्य सेवा के उदाहरण सर्व विदित हैं।

महाराष्ट्र के परम सन्त नामदेव कुत्ते को भी ईश्वर मानकर उसे चुपड़ी रोटी खिलाने का उपक्रम करते हैं। सन्त एकनाथ अपना गंगाजल जो शिवजी के अभिषेक के लिए था, उसे प्यास से तड़पते गधे को पिला देते हैं। ये सब आत्मतत्व का बोध कराने वाली घटनाएं हैं। परन्तु 'सीय राममय सब जगजानी', 'आत्मवत् सर्व भूतेषु', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया', 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' जैसी उदात्त भाव-भावना और चेतना पता नहीं क्यों कर्म काण्ड तक सीमित हो गयीं? समाज समरसता के मार्ग से भटक गया और छुआ-छूत, ऊँच-नीच, वर्गभेद, जाति भेद, रंगभेद, प्रान्त भेद, भाषा भेद के चक्रव्यूह में फंस गया। परिणाम स्वरूप मीनाक्षापुरम जैसी धर्मान्तरण की घटनाएं देश में घटित हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सर संघचालक मधुकर दत्तात्रेय बाला साहब देवरस ने भी मीनाक्षी पुरम की घटना से अत्यंत दुःखी होकर कहा था दुनिया में यदि छुआछूत पाप नहीं तो कुछ भी पाप नहीं। छुआछूत की जड़ें यद्यपि बहुत पुरानी हैं परन्तु ऐसा नहीं कि यह समाप्त नहीं हो सकतीं। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने अन्तःकरण के दैवीय भाव को जगाएं। बन्धुत्व, ममत्व, आत्मीयता के भाव का जागरण करें। शुद्ध-सात्विक प्रेम तत्व को जीवन में धारण करें। इनके अभाव में हमारे अन्दर ऐसी शक्तियाँ प्रभावी हो जाती हैं जो मानवीय व्यवहार में बाधक होती हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय भी कहते थे कि ममता के बिना समता या समरसता संभव नहीं।

अंग्रेजों ने रायबहादुर और खान बहादुर जैसी उपाधियाँ देकर हमारी एकता को तोड़ने के प्रयास किए। आज दलितों के नाम पर सामाजिक समरसता को कमजोर करने के प्रयास हो रहे हैं। इसके लिए आवश्यक है कि बुद्धिजीवी वर्ग राष्ट्रहित एवं देशहित को ध्यान में रखकर अपना उदार और व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करें। वे समाज को सम्यक दृष्टि दें, जिससे समाज में परस्पर मैत्री, सद्भावना, सहयोग, सेवा, विशुद्ध प्रेम, विश्वास, आदर, श्रद्धा-भाव पैदा हो। कटुता, ईर्ष्या, विद्वेष, भ्रम फैलाकर सामाजिक समरसता को अक्षुण नहीं रखा जा सकता यह सन्तोष का विषय है कि विश्व हिन्दू परिषद, विद्या भारती, सेवा भारती, धर्म जागरण समिति, विश्व गायत्री परिवार, आर्यसमाज जैसी अगणित संस्थाएं सामाजिक समरसता के लिए अनवरत प्रयासरत हैं। सामाजिक समरसता के प्रयास और अधिक गति से हों यह समय की माँग है। साधु-सन्त भी अपनी कथाओं के द्वारा सामाजिक समरसता के लिए पुनीत कार्य करते रहते हैं परन्तु ज्ञान को व्यवहार के धरातल पर जब उनके द्वारा लाया जाएगा तो निश्चय ही समरसता की गंगा निर्मल हो जाएगी।

■■■

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक/संकलन	पृष्ठ संख्या
1.	माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः	सतीश चन्द्र अग्रवाल	4
2.	सामाजिक समरसता और संघ	ललित	7
3.	सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा रामानुजाचार्य	गीता अग्रवाल	10
4.	खालसा पंथ की सिरजना	सरदार चिरंजीव सिंह	14
5.	अस्पृश्यता एक भयंकर भूल	मा. बाड़ासाहब देवरस के उद्‌बोधन के अंश	16
6.	समरसता के प्रवाहक श्री स्वामी रामानन्द	सुमंत डोगरा	20
7.	गोस्वामी तुलसीदास जी के विचार	डॉ. नीता सिंह	23
8.	स्वामी रामानन्द जी के विचार	डॉ. तेजपाल सिंह	25
9.	भगवान महावीर और सामाजिक समरसता	धरणेन्द्र जैन	27
10.	समरस समाज ही राष्ट्र की संजीवनी	अजय कुमार शर्मा	30
11.	मानवता से बड़ी कोई जाति नहीं, सामाजिक	विनीत कुमार	32
12.	सामाजिक समरसता का प्रश्न और महिलाएं	श्रीमती प्रियंकावीर	34
13.	सामाजिक समरसता के पुरोधा	करूणा शंकर शुक्ला	36
14.	सामाजिक समरसता का प्रतीक रामचरित मानस	अमरनाथ गोस्वामी	39
15.	सिख पंथ का सामाजिक समरसता में योगदान	कैलाश चन्द्र अग्रवाल	41

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः

संकलन - सतीश चन्द्र अग्रवाल

गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानस में लंका विजयोपरांत लंका में लक्ष्मण के राज्य करने की इच्छा होने पर भगवान श्रीराम ने कहा है। 'अपि स्वर्णमयी लंका न में रोचते लक्ष्मण, जननी जन्मभूमिश्चस्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात हे लक्ष्मण! यद्यपि यह लंका सोने की है तो भी मुझे रूचिकर नहीं है। मुझे तो जन्मभूमि, मेरी मातृभूमि ही स्वर्ग से बढ़कर प्रतीत होती है।

युगों-युगों से ही भारत वर्ष में रहने वाले प्रत्येक बन्धु-भगिनी ने इस भारतभूमि को माँ के समान माना है और कहा है कि यह भारतभूमि कोई भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं, यह साक्षात् जगतजननी है। इसी सजीव मनोभूमि के कारण प्रातःकाल जब हम बिस्तर से सोकर उठते हैं तो पृथ्वी पर अपना पैर रखने से पूर्व इस श्लोक का उच्चारण करते हैं-

करागे्र वसते लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।।
समुद्र वसने देवि, पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।।

हम अपनी मातृभूमि (धरती माता) पर पैर रखने से पूर्व क्षमायाचना करते हैं कि हे धरतीमाता मैं अपना पैर तेरे वक्षस्थल पर रख रहा हूँ, इसके लिये तू मुझे क्षमा कर। एक अन्य स्थान पर उन्होंने यह भी कहा है 'सिया राम में सब जग जानी' अर्थात प्रत्येक व्यक्ति में भगवान के दर्शन करने होंगे।

हमारी मान्यता है- ''वयं हिन्दु राष्ट्रांग भूताः'' हम सब हिन्दु इस राष्ट्र के अंगभूत घटक हैं। अतः आपस में सब सहोदर हैं। क्योंकि हम सभी एक ही भारतमाता के पुत्र हैं। इसलिए हम मानव मात्र के लिए ही नहीं प्रत्येक प्राणी मात्र के लिये भी संवेदनशील हैं। सदियों से इसी संवेदनशीलता के कारण भोजन करने से पूर्व हम यह चिंत्ता करते हैं कि मेरा पड़ौसी कहीं भूखा तो नहीं है। भोजन से करने से पूर्व अग्निहोत्र करना, गाय के लिए रोटी, चिड़िया के लिये दाना, कुत्ते के लिये रोटी निकालना यह सब प्रकट करता है कि प्रत्येक प्राणीमात्र के प्रति हम संवेदनशील हैं। यह संस्कार बचपन से ही हमें हमारे परिवार से प्राप्त होते रहे हैं। हिन्दू दर्शन में आत्मा के सर्वव्यापी अजर अमर स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई है और माना गया है कि मानव .मानव में कोई भेद नहीं हैं। इसी को हमने बन्धुत्व भाव कहा है इसी बन्धुत्व की भावना का विस्तार करते हुए हमारे यहाँ ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की कल्पना की गई है। यही नहीं, इस वसुधा में रहने वाले प्रत्येक मानव के कल्याण की कामना करते हुए हमने कहा है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुखभाग्भवेत्।।

सन्त सिरोमणि राम चरित मानस के रचियता गोस्वामी तुलसी दास ने कहा है संसार के समस्त जीव चर अचर सुर असुर सभी एक ही भगवान की सृष्टि है

अखिल विश्व यह मोर उपाया
सब पर मोर बराबर दाया।

गाँव में परस्पर सामंजस्य पूर्ण जीवन कैसे जीते थे, इसका एक प्रसंग है। गाँव की किसी भी बिटिया का विवाह होता तो ऐसा माना जाता था कि गाँव के प्रत्येक की बेटी का विवाह है। गाँव में विवाह होता

तो गाँव में से दही छाछ इकठ्ठा होता था।

महिलायें अपनी चक्की से स्वयं अपने हाथों से आटा पीस कर एक स्थान पर एकत्रित करतीं और सामूहिक रूप से बारात के भोजनादि की व्यवस्था करतीं थीं। किसी एक घर का दामाद पूरे गाँव का दामाद माना जाता था।

ऐसे ही एक गाँव का प्रसंग है- एक बालक अपने पिताजी के साथ गाँव की एक बारात में गया। पिताजी के ऊँगली पकड़कर गाँव की एक गली से गुजर रहा था तो देखा पिताजी के साथ-साथ ताऊजी भी चल रहे हैं। अचानक ताऊजी एक झोपड़ी के सामने रूके। जेब से कुछ रूपये निकाले, आवाज दी और देहरी पर रूपये रख कर चल दिये। बालक ने पिताजी से पूछा, ताऊजी ने यहाँ रूपये क्यूँ रखे। पिताजी ने कहा अपने ताऊजी से ही पूछ ले। बालक ने ताऊजी से पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया, यह हमारे गाँव की बेटी का घर है। हरिया भंगी की बेटी का घर है। बिटिया के घर के सामने से क्या हम ऐसे ही निकल जाएं। बालक ने पूछा, फिर आप रूके क्यूँ नहीं ? सहज सा उन्होंने उत्तर दिया, बेटी के घर का हम पानी भी नहीं पीते। यह आत्मीयता, यह बन्धुभाव ही हिन्दू संस्कृति की अमर देन है और यही हिन्दू संस्कृति का प्राण तत्व है। इसे ही हिन्दू समाज युगों युगों से जीता चला आ रहा है।

गाँव में सभी पर्व, उत्सव सामूहिक रूप से मनाये जाते थे। होली पर चौपाल पर गाये जाने वाले गीतों के लिए बिना किसी ऊँच-नीच, जाति का विचार किये इकठ्ठे होते थे। आपस में सभी गले मिलते थे। वरिष्ठजनों के पैर छूते थे। रक्षा बन्धन पर सभी एक दूसरे को राखी बाँधकर एक दूसरे की रक्षा का भार अपने ऊपर लेते थे। एक दूसरे की चिन्ता करने के कारण सभी सुखी रहते थे। गाँव में रामलीला का मंचन होता था। गाँव के ही विभिन्न जतियों के लोग कोई राम कोई लक्ष्मण कोई हनुमान, रावण बनता था। कोई भेद नहीं था। डा. अम्बेडकर ने 24 नबम्वर 1947 को दिल्ली में कहा था कि हम सब हिन्दू सगे भाई हैं।

रामायण में शबरी का प्रसंग भगवान श्री राम के सामाजिक समरसता भाव का अनुकरणीय उदाहरण है। शबरी भीलनी थी, राम क्षत्रिय थे। राम और शबरी के इस मार्मिक प्रसंग में राम ने शबरी के झूठे बेर तो खाये ही थे, साथ ही वृद्वा शबरी माँ के ममत्व का सुखद आनन्द भी प्राप्त किया था। शबरी ने भी राम को पुत्र समान स्नेह और वात्सल्य भाव का अद्‌भुत पान कराया था। शबरी जब अपने आराध्य प्रभु राम को एक-एक बेर चखकर खिला रही थी, तब उसके मन में एक ही भाव था कि मेरे प्रभु को कड़वा, वेस्वाद बेर न चला जाये। कष्ट सेवक को हो, प्रभु को न हो। प्रभु राम ने बेर खा लिये, लक्ष्मण ने फेंक दिये। राम समरसता के प्रतीक बन गये, लक्ष्मण रुढ़ियों में फँस गये। इतिहास ने, समय ने तुरन्त फैसला कर लिया। कहते हैं कि समय किसी का गुलाम नहीं होता। इसलिये मंत्र बन गया- श्री राम जय राम जय जय राम। दो प्रियजन कहीं मिलते हैं तो एक दूसरे के अभिवादन में कह देते हैं राम-राम। आज तक किसी ने भी एक दूसरे से मिलने पर लक्ष्मण-लक्ष्मण नहीं कहा और नहीं मंत्र बना, श्री लक्ष्मण जय लक्ष्मण जय जय लक्ष्मण। राम भगवान बन गये और लक्ष्मण महापुरूष, देवता की श्रेणी में खड़े कर दिये गये।

वन गमन के समय, प्रभु राम निषाद राज केवट को गले लगा कर सम्पन्नता, विपन्नता ऊँच-नीच का भेद भाव मिटा कर समाज के सामने एक आदर्श उपस्थित करते हैं। गिद्धराज जटायु रावण द्वारा सीता का हरण कर ले जाते समय रावण के पुष्पक विमान पर प्रहार करते हैं तदुपरांत जटायु की मृत्यु हो जाने पर राम अपने पिता दशरथ के समान जटायु को मानकर उसकी

अन्त्येष्टि करते हैं। समस्त जीव जगत से प्रेम और समरसता का यह अनूठा उदाहरण है। भगवान राम 'कपि चंचल सबहि विधि हीना' ऐसे निम्न कोटि की माने जाने वाली बन्दर जाति के महावीर हनुमान को वात्सल्य भाव से अनुग्रहीत कर उच्च देवता के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करते हैं और कहते हैं 'हनुमान तुम मेरे भाई भरत के समान प्रिय हो। **तुम मम प्रिय भरत सम भाई'**।

भगवान राम के समान ही भगवान कृष्ण के समय में भी स्नेह, अपनत्व, आत्मीयता की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही थी। संदीपनी आश्रम का उनका सखा सुदामा जब फटे पुराने कपड़ों में कृष्ण के द्वारका स्थित राज भवन के द्वार पर पहुँचता है तो द्वारपाल के मुख से सुदामा का नाम सुनते ही कृष्ण जैसा व्यक्तित्व नंगे पैर महल के द्वार की ओर दौड़ पड़ता है और कृष्ण सुदामा को गले ही नहीं लगाते हैं, वरन कृष्ण द्वारा सुदामा के पैर धोते समय उनके नैनों से आँसुओं की झड़ी लग जाती है। कहाँ था अमीरी गरीबी का भेद? सिक्ख पंथ के गुरू अर्जुन दास ने छूआछूत के भेद को मिटाने के लिए एक पंगत तथा एक संगत का नियम बनाया।

खालसा पंथ की स्थापना के समय जिन पाँच शिष्यों को गुरूगोविन्द सिंह ने अमृत चखाया वे पंच प्यारे सभी अलग-अलग जातियों के थे। भाई धर्मदास जाट, भाई दयाराम खत्री, भाई मोहकम चंद धाबी, भाई साहब चंद नाई और भाई हिम्मत राम कुम्हार ने अपने आप को हिन्दू धर्म की रक्षार्थ बलिदान के लिए प्रस्तुत किया। महर्षि रमण प्रतिदिन कोढ़ी दम्पत्ति के सेवा करते थे और कहते थे यही मेरे इष्ट हैं, भगवान है इनकी सेवा ही भगवान की पूजा है। संत रामानुजाचार्य जब गंगा स्नान के लिए जाते थे तो अपने बाह्मण शिष्य का सहारा लेते थे और जब गंगा स्नान कर वापस आते तो अपने अस्पृश्य शिष्य का सहारा लेते थे। लोगों के पूछने पर वे कहते थे गंगा कि स्नान से तो मेरा तन ही पवित्र होता है लेकिन अपने अस्पृश्य शिष्य का सहारा लेने से मेरा मन भी पवित्र हो जाता है।

सामाजिक संवदेना का तात्पर्य है सम-वेदना। सभी प्राणियों की वेदना को अपनी वेदना के समान अनुभव करना। सामाजिक संवदेना का यह भाव प्रकट करता है राष्ट्र के अन्तिम व्यक्ति के उत्कर्ष में ही राष्ट्र का उत्कर्ष निहित है। अत: इस राष्ट्र को सामर्थ्यवान बनाने, विश्व में इसको परं वैभव पुन: प्रतिष्ठित कराने हेतु यह आवश्यक है कि हम सभी मिलकर बिना किसी भेदभाव के जैसे एक गिलहरी ने रामेश्वरम में सेतु निर्माण के समय अपने पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार भूमिका का निर्वाह किया था हम भी उसी प्रकार अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान प्रदान करें और **'माता भूमि पुत्रोहम पृथिव्या:'** के भाव को साकार करें।

गंगा की पवित्रता

एक बार कबीर गंगा में स्नान कर रहे थे। चार ब्राह्मण भी वहाँ गंगा स्नान के लिए आये पर उनके पास स्नान के लिए लोटा न था। कबीर ने अपना लोटा गंगा किनारे की रेत से साफ किया उसे गंगा के जल से धोया और ब्राह्मणों से कहा कि "आप मेरा लोटा ले लीजिए।" इनमें से एक ब्राह्मण ने कहा - "मगर तुम तो जुलाहा हो। तुम्हारे लोटे से हम कैसे स्नान कर सकते हैं?" कबीर ने पुन: कहा - 'मैंने इसे गंगा की रेत से साफ कर गंगा जल से धो दिया है महाराज, अब भला लोटा अपवित्र कैसे रहा?" ब्राह्मण ने कहा - "मगर धोने के बाद भी तो तुमने इसे छू दिया है।"

कबीर ने कहा - "फिर तो गंगा का जल भी अपवित्र हो चुका है क्योंकि इसमें मैं स्नान कर चुका हूँ। अब तो आपको स्नान करने के लिए कोई दूसरी गंगा लानी पड़ेगी। कबीर का यह उत्तर सुनकर ब्राह्मण बुरी तरह झेंप गया।"

सामाजिक समरसता और संघ

- **ललित** (निदेशक केशवधाम)

सामाजिक समरसता हमारी विचार धारा से जुड़ा एक विषय है। सन् 1925 से संघ स्थापना के समय "हिन्दू समाज का संगठन" तथा इसी सिद्धांत के आधार पर डा॰ जी ने भारत माता की विश्व में जय जयकार कराने की बात कही।

किन्तु विचार का विषय यह है कि क्या सामाजिक समरसता के अभाव में हिन्दू समाज का संगठन सम्भव है। यदि हमें समाज का संगठन करना है तो समाज में समरसता निर्माण करनी होगी। यदि शरीर के किसी एक अंग का सही दिशा में विकास नहीं हुआ तो क्या वह शरीर स्वस्थ शरीर कहलायेगा? स्वस्थ शरीर तभी कहा जा सकता है जब शरीर के सभी अंगों का सही दिशा में विकास है।

किसी राष्ट्र की उन्नति भी उस राष्ट्र में रहने वाले समाज के ऊपर ही निर्भर करती है। स्वस्थ व संगठित समाज के अभाव में राष्ट्र भी उन्नति नहीं कर पाता। एक प्रसंग ध्यान में आता है। पानीपत के तीसरे युद्ध के समय एक दिन सांय काल अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि मराठा सरदार शिवराय भांड के खेमे में जगह-जगह धुँआ उठ रहा है। यह देखकर सैनिक को बुलाकर मराठा खेमे में उठ रहे धुँऐं के बारे में पूछा। सैनिक ने उसे जानकारी देते हुए कहा कि ये मराठों के चूल्हों से निकालने वाला धुआँ है। उस समय मराठा सैनिक अपना भोजन स्वयं बनाते थे। अब्दाली ने पूछा क्यों? तो जानकारी मिली कि वे दूसरों के हाथ का पकाया हुआ भोजन नहीं करते। अब्दाली को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने अपने सैनिकों से कहा युद्ध की तैयारी करो कल हमें विजय प्राप्त होगी। जो सेना एक साथ मिलकर भोजन नहीं कर सकती वो साथ मिलकर लड़ेगी कैसे? अगले दिन फिर युद्ध हुआ किन्तु इस बार के युद्ध का दृश्य ही दूसरा था। मुगल सेना जहाँ मिलकर युद्ध कर रही थी वहीं मराठा सैनिक व्यक्तिगत रूप से युद्ध लड़ रहे थे। अब्दाली ने मराठों की इस कमजोरी को समझ लिया। जीती बाजी मराठे हार गये, मुगल सेना जीत गई।

सोचने का विषय यह है कि क्या इस तरह का दोष हमारे समाज में प्रारम्भ से या कालान्तर में आया।

अपने देश के इतिहास के सम्बन्ध में जब हम विचार करते हैं तो एक बात ध्यान में आती है कि यह दोष प्रारम्भ में अपने समाज में नहीं था। किसी प्रकार की छूआछूत, ऊँच-नीच का भेदभाव हमारे समाज में नहीं था। सभी परस्पर स्नेह के साथ रहते थे। रामायण में एक प्रसंग आता है कि शबरी नाम की बूढ़ी महिला बेर खा रही थी। खाते-खाते बेर फेंक भी देती थी तथा कुछ बेर थैले में सम्भाल कर रख लेती।

एक सज्जन ने उस से पूछा तुम यह क्या कर रही हो तो वह उत्तर देती है कि मैं यहाँ बैठे-बैठे भगवान राम की प्रतीक्षा कर रही हूँ। जब भगवान आयेंगे तो उन्हें बेर खिलाऊँगी, इसलिये जो बेर मीठे हैं उन्हें मैं चख कर रख लेती हूँ और जो बेर खट्टे हैं वह खा लेती हूँ। एक दिन भगवान राम स्वयं वहाँ आये उस शबरी के झूठे बेर खाये। समरसता का ऐसा उदाहरण और कहाँ मिलेगा?

ऋग्वेद का श्लोक है कि -

"संमगच्छध्वं संबदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते"।।

अर्थात् कदम से कदम मिलाकर चलो, स्वर में स्वर मिलाकर बोलो, तुम्हारे मन में समान बोध हो। पूर्व काल में जैसे देवों ने अपना भाग्य प्राप्त किया। सम्मानित बुद्धि से कार्य वाले उसी प्रकार ही अपना अभीष्ट प्राप्त करते हैं।

अर्थात् समरसता होने पर ही हम समान रूप से कदम से कदम मिलाकर कार्य कर सकते हैं।

किन्तु कालान्तर में मुगलों के समय में इस समरसता को चोट पहुँची। उन्होंने जबरन धर्मातरण कर ऐसे जुझारू वर्ग को जिसने धर्म परिवर्तन स्वीकार किया उसे मैला होने वाले कार्य में लगाया। परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे समाज में छूआछूत ऊँच नीच का भाव पनपने लगा। ऐसे समाज को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। यहाँ राज परिवार की महिला मीराबाई ने एक जूते बनाने वाले संत रविदास को गुरू बनाया।

उस समय स्थिति आ गई थी कि लोग उनकी परछाई से भी दूर भागने लगे थे। सन् 1892 में स्वामी विवेकानन्द जब केरल गये तो उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति भागा चला आ रहा है उसके पीछे कपड़ा बंधा है जो सड़क साफ कर रहा है। अर्थात् जिस रास्ते को निकला वह रास्ता गन्दा हो गया इसलिये उस रास्तों को कपड़ा साफ करता चले। विवेकानन्द ने यह दृश्य देख केरल को पागलखाना कहा था। डा॰ अम्बेडकर ने भी जब इस तरह कुरीतियाँ देखी तो उनका मन बैचेन हो गया। नासिक के काताराम मन्दिर में स्वयं उनको भी प्रवेश करने से रोका गया। 1930 से 1935 तक उन्होंने मन्दिर में प्रवेश हेतु आन्दोलन चलाया। डा॰ अम्बेडकर ने अंत में परेशान होकर कहा कि मैंने हिन्दू धर्म में जन्म तो लिया है, किन्तु हिन्दू रहकर मरूँगा नहीं। हैदराबाद के निजाम ने अम्बेडकर के पास संदेश भेजा यदि इस्लाम स्वीकार करो तो हीरे जबाहरात से तुलवा दूँगा। इसाईयों ने लालच दिया इसाई बनो तो पोप जॉन पाल की उपाधि से विभूषित करेंगे। कारण यदि अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन किया तो लाखों की संस्था में उनके अनुयायी भी धर्म परिवर्तन करेंगे। लेकिन अम्बेडकर ने दोनों में से किसी की भी बात नहीं मानी। उन्होंने कहा यह धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण होगा और उन्होंने फिर 1956 में बौद्ध धर्म अपनाकर मध्य मार्ग निकाला। 20 वर्ष तक उन्होंने प्रतीक्षा की किन्तु इस बीच हिन्दू समाज की तरफ से उन्हें रोकने का कोई प्रयत्न नहीं हुआ। कल्पना करो कि यदि दुर्भाग्य वश अम्बडेकर जी यह प्रस्ताव स्वीकार कर मुसलमान या ईसाई बन गये होते तो देश का क्या होता?

अम्बेडकर जी की उसी समय डा॰ हेडगेवार से भेंट हुई, संघ को समझा किन्तु उन्होंने कहा डा॰ जी एक कुँए, तालाब पर सवर्ण जाति के लोग व उनके पशु पानी पी सकते हैं, दलितों के पशु भी पानी पी सकते हैं किन्तु दलित नहीं पी सकते, क्यों? डॉ. अम्बेडकर ने कहा, डॉ. जी आपका कार्य अच्छा है किन्तु गति बहुत धीमी है। इतनी देर तक मेरा समाज इंतजार नहीं कर सकता। विचार का विषय है कि ऐसे में हमारी तथा हमारी शाखा की क्या भूमिका हो? क्या हमारी शाखा सामाजिक समरसता निर्माण करने में कोई भूमिका अदा कर सकती है?

1934 में बर्धा शिविर में महात्मा गाँधी आये सब को एक साथ पंक्ति में भोजन कराते देख आश्चर्य चकित हो गये। बोले क्या इनमें कोई हरिजन नहीं। जानकारी मिली, यहाँ कोई हरिजन नहीं, यहाँ सब भारत माता के पुत्र हैं तो फिर ऊँच-नीच, भेदभाव कैसा।

अपनी शाखा का प्रत्येक कार्यक्रम संस्कार देने वाला होता है। सभी मिलकर सहभोज करते हैं भोजन किसके घर से आया पता ही नहीं, सब साथ मिलकर करते हैं। श्रीगुरूजी की - गरीब स्वयंसेवक के यहाँ

चाय पीना तथा कन्या पूजन कार्यक्रम। ऐसे अनेकों उदाहरण संघ के स्वयंसेवकों ने समाज में प्रस्तुत किये। सन् 1992 में रामजन्म भूमि का आन्दोलन, सरकार ने कार सेवा पर प्रतिबंध लगा दिया। सभी कारसेवक गाँव-गाँव, खेत-खेत होते हुए अयोध्या पहुँचे। मार्ग में पड़ने वाले गाँव के लोगों ने उन के भोजन विश्राम की व्यवस्था की। किसको क्या पता खाने वाला कौन और खिलाने वाला कौन? सबके मन में एक ही भाव था, हम सब हिन्दू हैं, भगवान राम की जन्म भूमि से ढांचा हटना चाहिये और वहाँ भगवान राम के मन्दिर का निर्माण होना चाहिये। ऐसे राम मन्दिर के निर्माण हेतु पहली शिला भी कामेश्वर चौपाल नाम के एक दलित कार्यकर्ता ने रखी।

यह सब कैसे सम्भव हुआ? ये सब संघ की शाखा से प्राप्त होने संस्कारों का ही परिणाम था। इस समरसता के फलस्वरूप ही अपना राष्ट्र समृद्ध और अखण्ड हो सकेगा। ■■■

जिन्दगी मत बिगाड़ो ....

किसी नगर में एक जुलाहा रहता था। सभी से मीठा बोलता था और कभी किसी से नाराज नहीं होता था। लोग उसे संत कहा करते थे। एक दिन कुछ शरारती लड़के उसके यहाँ पहुँचे। वे उसकी परीक्षा लेकर देखना चाहते थे कि उसे कैसे गुस्सा नहीं आता। उन लड़कों को देखते ही जुलाहे ने बड़े प्यार से कहा- '' आओ बेटा, तुम लोगों को क्या चाहिये''? सामने रखी साड़ियों में से एक की ओर इशारा करके एक लड़के ने कहा, 'मुझे वह साड़ी चाहिये। उसका क्या लोगे?' जुलाहे ने कहा, 'दो रूपये।' उस लड़के ने साड़ी हाथ में ले ली और उसके दो टुकड़े कर डालें। बोला, 'मुझे पूरी नहीं, आधी चाहिये। इसका क्या लोगे?' जुलाहे ने कहा एक रूपया।' नौजवान ने उस आधी साड़ी के भी दो टुकड़े करके पूछा, ' इसका क्या दाम होगा?'' आठ आना।' जुलाहे ने बिना किसी प्रकार की नाराजगी के कहा। युवक तो उसको चिढ़ाना चाहता था। वह साड़ी के टुकड़े पर टुकड़े करता गया पर उस जुलाहे ने न उसको रोका, न डांटा, न अपने माथे पर शिकन तक आने दी। जब साड़ी के बहुत से टुकड़े हो गये तो हँसकर लड़का बोला, 'ये टुकड़ो मेरे अब किस काम के! मैं इन्हें नहीं खरीदूँगा।' जुलाहे ने बिना किसी तेजी से कहा, ' तुम ठीक कहते हो बेटे, ये टुकड़े अब तुम्हारे क्या, किसी के भी काम नहीं आ सकते।' युवक को उसकी इस बात पर कुछ शर्म आई।

उसने कहा, ' तुम गरीब हो। मैंने तुम्हारी चीज खराब कर दी, उसका घाटा मुझे पूरा करना चाहिये। मैं तुम्हारी साड़ी के दाम देता हूँ।' जुलाहे ने धीमी आवाज में कहा, क्या तुम समझते हो कि रूपये से यह घाटा पूरा हो जायेगा? देखो, किसानों की मेहनत से कपास पैदा हुई। उसकी रुई से मेरी स्त्री ने सूत काता। मैंने उस सूत को रंगा, फिर उससे साड़ी बुनी। हमारी मेहनत तब वसूल होती जब कोई उस साड़ी को पहनता। तुमने तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इतने लोगों की मेहनत बेकार गई। रूपये इस घाटे को कैसे पूरा कर सकते हैं।' लड़का पानी-पानी हो गया। उसकी आँखें भर आई।

जुलाहे ने उसे उठाकर छाती से लगाते हुए कहा- 'बेटा, अगर मैं लालच करके दो रूपये ले लेता तो तुम्हारी जिन्दगी का वही हाल होता, जो इस साड़ी का हुआ। तुम्हारी जिन्दगी तार-तार हो जाती, वह किसी के काम न आती। मेरे बच्चे, एक साड़ी खराब होने के बाद, दूसरी तैयार हो सकती है, लेकिन जिन्दगी बिगड़ गई तो दूसरी कहाँ से लाओगे? लड़का और उसके साथी शर्मिन्दा हुए सिर नीचा करके अपने घर गये। यह जुलाहे थे दक्षिण से महान् संत तिरुवल्लुवर, जिनका लिखा 'कुरल' आज से दो हजार वर्ष बाद भी श्रद्धा से पढ़ा जाता है। ■■■

सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा रामानुजाचार्य

संकलन - श्रीमती गीता अग्रवाल

भारत के महान अग्रगणय संत, विशिष्टा द्वैत मत के प्रणेता तथा मूर्धन्य विद्वान श्री रामानुचार्य जी के जन्म सहस्राब्दी के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ऐसे श्रेष्ठ महानुभाव के प्रति अपना आदरपूर्वक अभिवादन प्रकट करता है। श्रीरामानुजाचार्य एक विलक्षण क्षमतावान एवं अद्‌भुत विद्वान संत थे। उनका जन्म आज से एक हजार वर्ष पूर्व (चैत्र शु. 5, वि.सं. 1074, 1 मई, 1017 को) तमिलनाडु के श्री पेरुम्बदूर नामक स्थान पर हुआ था।

प्रकाण्ड विद्वान श्रीरामानुजाचार्य ने गीता, ब्रह्मसूत्र तथा उपनिषदों पर युगानुकूल भाष्य लिखे तथा समाज में प्रचलित हो चुकी रुढ़ियों तथा निरर्थक परम्पराओं के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाकर निर्दोष समाज के निर्माण हेतु अनेक प्रभावी कदम उठाये। श्रीरामानुजाचार्य ने अपने जीवन में अनेक गुरुओं से शिक्षा अर्जित की तथा शूद्र वर्ण में जन्में महान् विद्वानों के श्रीचरणों में बैठकर ज्ञान अर्जित करने में अपने को धन्य माना।

मुस्लिम आक्रमणकारी दक्षिण के मेलकोटे से भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा को लूटकर दिल्ली ले आये थे। श्रीरामानुजाचार्य सैकड़ों लोगों को लेकर स्वयं दिल्ली पहुँचे, और भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा को लेकर वापस मेलुकोटै (कर्नाटक) आ गये। यह एक असंभव दिखने वाला कार्य था, जो उन्होंने सम्पन्न किया। मुस्लिम राज परिवार की एक पुत्री को श्रीकृष्ण के प्रति भक्तिभाव के कारण श्रीरामानुजाचार्य ने सम्मानपूर्वक मंदिर के पूजा कार्यों में समुचित स्थान दिया। वह बालिका कृष्णभक्ति में नृत्य करती थी और बीबी नाच्चियार के नाम से प्रसिद्ध हो गई श्रीरामानुजाचार्य का यह एक क्रांतिकारी कदम था।

-तिरुकोटिपुर के महात्मा नाम्बि ने श्रीरामानुजाचार्य को एक अष्टाक्षरी मंत्र 'ऊँ नमो नारायणाय' की दीक्षा दी और कहा कि इस मंत्र को अन्य किसी को बताना नहीं किन्तु श्रीरामानुजाचार्य जी ने सभी को बुलाया और इस मंत्र को बता दिया। गुरु नाम्बि ने कहा कि तुम नर्क में जाओगे। श्रीरामानुजाचार्य ने शांत भाव से कहा कि यदि लाखों लोग इस मंत्र से शक्ति पाते हों तो मैं नरक में जाने को तैयार हूँ। **श्रीरामानुजाचार्य ने आग्रह किया कि जाति का भाव त्याग कर सभी लोग श्रेष्ठ शिक्षा ग्रहण करें। जाति का अहंकार मनुष्य का शत्रु है।**

श्रीरामानुजाचार्य ने मंदिर की पूजा आदि की व्यवस्थाओं में समाज के सभी वर्गों को सम्मानजनक स्थान दिलाया।

वृद्धावस्था के समय श्री रामानुजाचार्य जब स्नान करने जाते थे तब एक ब्राह्मण व्यक्ति का सहारा लेकर जाते थे और जब वे स्नान करके वापस आते तब वे शूद्र व्यक्ति के कंधों का सहारा लेकर आते थे।

श्री रामानुजाचार्य ने निम्न कही जाने वाली जाति के तिरुक्कुलत्तार को नित्य वैष्णव घोषित कर समाज में सम्मान का स्थान दिया तथा पिछड़े वर्ग के तिरुप्पाणन को दक्षिण के प्रतिष्ठित 13 आलवारों (वैष्णव संतों) में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

उन्होंने नाम्बि नामक विद्वान व्यक्ति का अन्तिम संस्कार ब्राह्मण के संस्कार की तरह करवाया तथा गोल्ला समाज को तिरुपति बालाजी मंदिर में प्रथम दर्शन का अधिकार दिया।

इतना ही नहीं तो कर्नाटक के मेलुकोटै मंदिर में भी वहाँ के अन्यंत पिछड़े समाज को प्रवेश की अनुमति दी तथा मालदासरि नामक पिछड़े समाज के नाम से वार्षिक एकादशी पर्व प्रारम्भ किया।

संक्षेप में कहें तो आज से एक हजार वर्ष पूर्व श्रीरामानुजाचार्य जी ने विद्वता तथा अपने श्रेष्ठ व्यवहार से समाज में एक नए युग की शुरुआत की। जातिगत तथा वर्णगत भेदभावों के विरोध में उन्होंने सामाजिक परिवर्तन और सुधारों का नवीन युग प्रारम्भ किया तथा समाज के सामने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया-

'जाति: कारणे लोके गुणा: कल्याण हेवत:'

अर्थात् मनुष्य के कल्याण का कारण उसकी जाति नहीं वरन् उसके गुण ही होते हैं। श्रीरामानुजाचार्य के इस आध्यात्मिक संदेश को आधार मनाकर देशभर में अभूतपूर्व भक्ति-आंदोलन खड़ा हुआ। देखते ही देखते 13 वीं शताब्दी के बाद समाज के अनेक पक्षों. को सुदृढ़ तथा दोष मुक्त करने का आह्वान करने वाली हजारों संतों और भक्तों की महान् परम्परा देश में खड़ी हुई। इस भक्ति आंदोलन के सहारे देश अपने कठिन काल को सफलतापूर्वक पार कर आया।

आज उनके जन्म की सहस्राब्दी मनाते समय हम उनका पुण्य स्मरण करें, उनके महान् आह्वान को आज अपने सम्मुख रखें और देश की वर्तमान परिस्थितियों में सभी के अन्दर एक ईश्वर की अनुभूति के साथ' एकात्मदर्शन' को आधार बनाकर आगे बढ़ें। इस सहस्राब्दि वर्ष में देश भर में होने वाले कार्यक्रमों में हम भाग लें और उनके महान् विचार और दर्शन को आगे बढ़ाने में सहयोग दें। यह उस महान् आध्यात्मिक विभूति के प्रति हमार सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

समरसता का मंत्र ..... *समरसता का भाव अपने घर से प्रारम्भ करें*

संघ प्रचारकों के गाजियाबाद वर्ग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक पू. रज्जू भैया ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए समरसता के विषय में कहा था कि समरसता का भाव अपने घर से प्रारम्भ करें। उन्होंने इस संदर्भ में अपने परिवार की एक घटना भी सुनाई। उन्होंने बताया- 'हमारे घर में भोजन बनाने एक प्रौढ़ महिला आती थी। उन ठकुरानी की मानसिकता पुराने रुढ़िगत संस्कारों के कारण 'ठाकुरपन' की थी, अत: अन्य किसी की जूठी थाली उठाना कठिन था। मेरे संघ के स्वयंसेवक होने के कारण अनेक कार्यकर्ता हमारे साथ-साथ घर पर आते थे। साथ-साथ भोजन करते। उनमें से अनेक तथा कथित छोटी जातियों के भी होते थे पर हमारे लिये तो सब समान थे, पर ठकुरानी को कौन समझाये, कैसे समझाये, ऐसे में, मैं स्वयं ठकुरानी को कहता था, अपने और काम देखें और मैं स्वयं उन स्वंयसेवकों की थाली उठाकर ले जाता था। वह ठकुरानी हमें स्नेह भी बहुत करती थी, जब उन्होंने मुझे जूठी थालियाँ उठाते देखा तो उनका भी मन बदल गया। इससे यह बात ध्यान में आयी कि दूसरों से कहने की जगह स्वयं समरसता का व्यवहार करो। यह प्रक्रिया अपने-अपने घरों में भी आवश्यक है, इससे समरसता आयेगी।

सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड
स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन

सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन का गठन सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों मे पढ़ने वाले विद्यार्थियों को खेल के प्रति प्रोत्साहन देने के लिए किया गया।

संस्था के उद्देश्य:-

- यह संस्था देश भर के सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों के खिलाडियों को एस0जी0एफ0आई0 के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कराना।
- कुछ प्रदेश केवल अपने स्टेट बोर्ड के स्कूली खिलाडियों को ही चयन स्कूल नेशनल के लिए करते है, जबकि सी0बी0एस0ई0 विद्यालय पूरे देश भर में स्थापित है। अत: देश के सभी खिलाडियों को खेल में अपनी प्रतिभ दिखाने का मोका मिल सके।
- संस्था के सचिव श्री सुरेश चन्द्र शर्मा निदेशक डॉ0 प्रदीप मिश्रा ने खिलाडियों के हित को देखते हु सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन की स्थापना की।

संस्था की उपलब्धिया:-

- यह संस्था (एस0जी0एफ0आई0) स्कूल गेम्स फैडरेशन ऑफ इण्डिया से मान्यता प्राप्त संस्था है।
- एस0जी0एफ0आई0 की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेश खिलाडियों का जाना सुनिश्चित कराया।
- प्रथम वर्ष में ही सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन के प्रतिभाशाली खिलाडियों राष्ट्रीय प्रतियोगितायों में मैडल जीतना शुरू कर दिया व अपनी सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेय आर्गनाइजेशन इकाई को राष्ट्रीय पदक तालिका में 35 वे स्थान पर पहुँचाया।
- अगले वर्ष सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन एस0जी0एफ0आई0 की राष्ट्रीय पद तालिका में 22 वे स्थान पर पहुँचा।
- श्री सुरेश चन्द्र शर्मा एवं श्री प्रदीप मिश्र के मार्ग दर्शन के कारण 62वी राष्ट्रीय मा0 विद्यालयी प्रतियोगिता क पदक तालिका में 9 वें स्थान पर है।
- संस्था ने अब तक लगभग 4000 खिलाडियों को राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने का अवसर प्रदा किया है।
- वर्तमान में सी0बी0एस0ई0 बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन अपनी सफलता का परचम पूरे भारत वर्ष लहरा रहा है।

लक्ष्य:-

- संस्था का लक्ष्य यह है कि वह अधिक से अधिक प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों को प्रतिभाग कराये।
- संस्था का लक्ष्य ऑलम्पिक खेलों, राष्ट्रीय मण्डल खेल, एशियन खेल प्रतियोगिताओं में भारत क जीत-पदक दिलाने वाले खिलाड़ियों को तैयार/प्रोत्साहित करना है जोकि भविष्य में हमारा संगठन प्रदेश औ सर्वोपरि हमारे देश का नाम पूरे विश्व में गौरवान्वित कर सकें।

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

स्वच्छ शिकोहाबाद सुन्दर शिकोहाबाद

नगर पालिका परिषद, शिकोहाबाद

अपील

1. सड़क पर गंदगी न फैलायें।
2. नगर पालिका के सफाई कर्मचारी को कूड़ा दें।
3. नालियों में कूड़ा करकट न डालें।
4. पॉलीथिन का प्रयोग न करें।
5. खुले में शौच न करें।
6. स्वच्छ भारत मिशन में पालिका का सहयोग करें।

अनिल कुमार
अधिशासी अधिकारी

रामप्रकाश यादव 'नेहरू जी'
अध्यक्ष

समस्त सभासद नगर पालिका परिषद, शिकोहाबाद

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

सी. बी. एस. ई. द्वारा मान्यता प्राप्त

गणेशराम नागर सरस्वती शिशु बालिका विद्या मन्दिर

महादेव मन्दिर के सामने, बल्केश्वर, आगरा - 282004 फोन - 8899716313, 8899816313, 7409233459

e-mail : hanesh.ram11@yahoo.co.in website : www.grnsbvm.org Affiliation Code : 2130570 Exam code 54023

उपलब्धियां

- आगरा का एक मात्र सी.बी.एस.सी. मान्यता प्राप्त अंग्रेजी माध्यम बालिका विद्यालय।
- अत्यन्त योग्य एवं अनुभवी शिक्षिकाएँ।
- करीब 2 एकड़ का विशाल परिसर।
- विज्ञान, वाणिज्य और कला संकाय उपलब्ध।
- विद्यालय में सीसीटीवी कैमरे उपलब्ध।
- इंटरएक्टिव टच स्क्रीन तथा प्रोजेक्टर के साथ स्मार्ट क्लास।
- वाहन सुविधा उपलब्ध।
- सुव्यवस्थित कम्प्यूटर प्रयोगशाला, विज्ञान प्रयोगशाला, रसायन प्रयोगशाला, गणित प्रयोगशाला।
- सुव्यवस्थित पुस्तकालय, संगीत कक्ष, खेल कक्ष।
- एन. सी. सी. एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बॉस्केटबॉल, बालीबॉल, कबड्डी, खो-खो आदि की सुविधाएँ उपलब्ध।
- आर. ओ. द्वारा शुद्ध पेयजल।
- विशेष सूचनाओं के लिए एस. एम. एस. सर्विस उपलब्ध।

समरसता की यात्रा में मील का पत्थर

खालसा पंथ की सिरजना

– सरदार चिरंजीव सिंह

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी

खालसा पंथ की रचना न केवल गुरु नानक परम्परा में एक नया मोड़ है, अपितु भारत के जन-जागरण इतिहास में एक महान् राष्ट्रीय आंदोलन है। आनन्दपुर साहिब में 30 मार्च 1699 की बैसाखी का पर्व, भारत में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रांति का नगाड़ा है। इस दिन नौ सिख गुरुओं की तपस्या अर्थात् 'अभिभाज्य भक्ति' के साथ-साथ विराट दैवीय शक्ति का योग दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी ने एक आलौकिक घटना के द्वारा प्रगट किया। उनकी स्पष्ट धारणा ने संसार को चकित कर दिया, जब वह बोल उठे- **'मेरा सिख, भक्ति के साथ शक्ति की आराधना करेगा। जब वह भक्ति में लीन होगा तो वह संत होगा, जब वह शत्रु का नाश करने हेतु वीर रूप धारणा करेगा, उस समय वह 'सिपाही' होगा।** वह एक ही समय में संत और सिपाही होगा'। उन्होंने भारतीय समाज में जाति भेद के कारण आई दुर्बलता को दूर करने का प्रण किया और कहा-

चारों वर्णों को एक कराऊं।

दशम् गुरु ने चारों वर्णों को एक करके अपने खालसे के अपार व्यक्तित्व में संजो दिया और संकेत किया कि **मेरा सिख ब्रह्म मुहूर्त में (अमृत वेला) उठकर जब गुरुवाणी गाएगा- पाँच वाणियों का पाठ करेगा उस समय वह ब्राह्मण होगा। जब ईमानदारी की कमाई करेगा- किरत करेगा, वंड के छकेगा, नाम जपेगा तो वह वैश्य होगा जब कार सेवा करेगा, गुरु के लंगर तथा संगत के जोड़ों और सरोवर व दुखियों की सेवा करेगा, तब वह शूद्र होगा और जब देश धर्म के शत्रुओं से, अत्याचारी दुराचारी दुष्टों से, सीमाओं की रक्षा करता हुआ युद्ध करेगा, तब वह क्षत्रिय होगा।** भारतीय समाज जब जात-पात के टुकड़ों में बंट गया था और अपना वर्ण धर्म भूल चुका था। उस समय यह बात नवजीवन संचार की बूटी के समान सिद्ध हुई। समय की आवश्यकता एवं युग की मांग को पूरा करने के लिये गुरु गोविन्द सिंह जी ने चारों वर्णों को अपने खालसे में एक रूप कर दिया।

प्राय: सभी इतिहासकार इस विषय पर सहमत हैं कि उस 1699 की बैसाखी पर्व पर केशगढ़ पर 80 हजार के लगभग जन समूह उपस्थित था। एक भव्य अति सुन्दर शामियाना और मंच बनाया गया था। प्रात: शब्दकीर्तन के पश्चात् एक नया कौतुक करते हुए दशम पिता अपने सिंह सैनिक वेश में सुसज्जित होकर हाथ में नंगी कृपाण लहराते हुए संगत के सामने आए। एक संक्षिप्त जोशीले भाषण के बाद गुरुजी गरज कर बोले- ' आज देश धर्म की रक्षा के लिये मुझे शस्त्रों की नहीं अपने सिख के शीश की आवश्यकता है। मुझे सिख का केवल शीश चाहिये।' सारी सभा में सन्नाटा छा गया।

किसी को समझ में नहीं आया कि गुरु को क्या हो गया। फिर आवाज आई- 'मुझे अपने सिख का शीश

चाहिये, केवल शीश।' कुछ भगदड़ सी भी मची। कुछ सिख, माता गुजरी के पास पहुँचे। माता जी से अनुरोध किया कि वह गुरुजी को समझाएं, कारण गुरुजी की मांग से अनर्थ हो जायेगा। परन्तु माताजी ने पुत्र गुरु के कामकाज में दखल देने से इंकार कर दिया उधर गुरुजी ने अडिग स्वर में फिर शीश की मांग की। सच्चे सिख समझ गए यह परीक्षा की घड़ी है। गुरु की परीक्षा में हमें खरा उतराना चाहिये। अत: लाहौर निवासी दयाराम खत्री हाथ जोड़ गुरु के सामने खड़ा हो गया- 'गुरुदेव दास का शीश हाजिर है।' गुरुजी दयाराम को पास के खेमें में ले गए। भय से सहमी संगत ने एक भयंकर खटाक की आवाज सुनी। खेमे में लगी नाली से सबको बहती रक्त की धारा नजर आई। तत्पश्चात् तुरन्त ही गुरुजी अपनी खूनसनी तलवार लेकर सबके सामने आकर ऊँचे स्वर में बोले- 'और शीश चाहिये।' दूसरा सिख हस्तिनापुर का जाट धर्मदास हाथ जोड़कर सामने आया। गुरुजी उसे भी अन्दर ले गए, वही कौतुक करके पुन: बाहर आ गये। फिर बोले- ' बेअंत शीश चाहिये।' द्वारकापुरी से धोबी मुहकमचंद गुरुजी के सामने आए। उसके साथ ही वैसी ही घटना घटी फिर कुछ देर स्तब्धता सी छा गई। गुरुजी का स्वर और जोश से भर गया।

'बेटा कोई सिख बेटा, जो करे शीश भेंटा।
बेअन्त सीस चाहिये, सो जलद-जलद आइए।'

इस पर बीदर (कर्नाटक) से साहबचन्द नाई सामने आया और अन्त में जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) का हिम्मत राय भिश्ती सामने आ गया। कुछ देर गुरुजी खेमें में रहे और अचानक पाँचों सिखों को नए केसरिया वेश में सुन्दर पगड़ी और वस्त्रों से सजाकर बाहर ले आए। गुरुजी ने पाँचों प्यारों को एक बड़े बाटे में पवित्र जल भरकर खण्डा (खडग) घुमाया फिराया। माता साहिब देवा ने मीठे बताशे जल में डालकर अमृत को मीठा बनाया था। उस एक ही बड़े बाटे में मीठे अमृत का पान पंच प्यारों को करवाया। अर्थात् जात-पात का भेद मिटाकर, सिखों को वीर योद्धा, संत और सिपाही बना दिया। अब और सिख आने को तैयार होने लगे। गुरुजी यह देखकर बुलन्द आवाज में कहा- 'गुरु की भेंट पूरी हो चुकी है। अमृत छककर अब यह सिख सिंह बन गए हैं। खालिस शुद्ध पवित्र खालसा रूप है। यह मेरे पाँच प्यारे हैं। मैं सदा इनमें निवास करुँगा।

खालसा मेरा रूप है खास:
खालसाह महिं हौं करहुँ निवास।
खालसा मेरा मुख है अंगा।
खालसे के ही सद सद संगा।

थोड़ी देर बाद गुरु गोविन्द सिंह जी ने पाँचों प्यारे को ऊँचे तख्त सिंहासन पर बैठाकर आप स्वयं वीरासन में हाथ जोड़कर उनके सामने बैठ गये। नम्रतापूर्वक बोले- 'गुरु रूप खालसा जी आप पावन पवित्र हो गए। आप मुझे भी पवित्र बनाओ, मुझे भी अमृतपान करवाओ।' अब गुरु ने स्वयं उसी अमृत को पान कराने के लिये दयासिंह से विनती की। दया सिंह ने विनती मान ली। परन्तु वचन किया- सच्चे पातशाह हमने तो शीश देकर अमृतपान किया है। आप खालसा को क्या भेंट करोगे? हाथ जोड़कर गुरुजी बोले- 'मैं अपने चारों सुत खालसा की भेंट चढ़ाऊँगा-

'खालसा के प्रसादि करि,
सुत वित कोस भण्डार।
राज माल सादन सकल
पुत्र कलित्र बिवहार॥'

तब पंच प्यारों ने गुरु गोविन्द राय जी को अमृत पान करवाया। एक वयोवृद्ध स्व. सनातन धर्मी संत ने यहाँ तक कहा- ' 1699 को बैसाखी का दिन खालसे का जन्म तो है ही इससे आगे बढ़कर यह तो हिन्दू का पुनर्जन्म है।' यह घटना सामाजिक समरसता की यात्रा में मील का पत्थर सिद्ध हुई। ■■■

अस्पृश्यता एक भयंकर भूल

पूना की वार्षिक 'वसन्त व्याख्यानमाला' देशव्यापी महत्व का एक ऐसा मंच है, जहाँ जीवन के विविध पक्षों पर उच्चस्तरीय चर्चा होती है। 1974 इस व्याख्यानमाला का शताब्दी वर्ष था। उस वर्ष 8 मई को वक्ता थे संघ के तृतीय सरसंघचालक बालासाहेब देवरस और उनके भाषण का विषय था 'सामाजिक समता और हिन्दू संगठन'। सामाजिक समरसता पर दिये गये प्रसिद्ध उद्‌बोधन के कुछ अंश यहाँ दिये जा रहे हैं-

मधुकर दत्तात्रेय देवरस
(बाबा साहेब)

प्राचीनकाल में जो व्यवस्थायें निर्माण हुई वे उस काल की आवश्यकता के अनुरुप तैयार की गयी, ऐसा मुझे लगता है। आज यदि उनकी आवश्यकता न हो, उनकी उपयोगिता समाप्त हो गयी हो, तो हमें उनका त्याग करना चाहिये। अपनी वर्ण-व्यवस्था का ही विचार करें तो हमारे ध्यान में आयेगा कि समाज में चार प्रकार के कार्य समाज-धारण, के लिये अच्छे ढंग से होने आवश्यक हैं, ऐसा मानकर तथा समाज के विविध व्यक्तियों और व्यक्ति समूहों की स्वाभाविक क्षमता और प्रकृति को देखते हुए ही इस प्रकार की व्यवस्था निर्मित हुई। किन्तु उस व्यवस्था में भेदों की कल्पना कदापि नहीं थी।

कुछ विद्वानों के मतानुसार प्रारम्भ में यह जन्मानुसार नहीं थी। किन्तु आगे चलकर इस विशाल देश में तथा जनसमूह में गुणों को कैसे पहचाना जाए, यह प्रश्न विचारशील लोगों के मन में उठा होगा। किसी भी विशिष्ट परीक्षा-पद्धति के अभाव में उन्होंन शायद जन्म से ही वर्ण का बोध स्वीकार किया होगा, ऐसा मैं समझता हूँ। किन्तु उसमें ऊँच-नीच का भाव नहीं था बल्कि सहस्र शीर्ष, सहस्राक्ष, सहस्रपाद ऐसे विराट समाज के ये सभी महत्वपूर्ण अवयव हैं, यही भव्योदात्त कल्पना इसके पीछे रही है। अत: यह स्पष्ट है कि इसमें, पैरों से जंघायें श्रेष्ठ और जंघाओं से हाथ अथवा हाथों से सिर श्रेष्ठ हैं, इस प्रकार की विपरीत या हास्यास्पद भावना कदापि नहीं थी।

इसी कारण एक जमाने में यह व्यवस्था सर्वमान्य थी और कुछ काल तक सुचारु रूप से चल रही थी। इसके लिये संयमन और संतुलन की व्यवस्था थी। ज्ञानशक्ति को पृथक किया गया। उसे सम्मान तो दिया, पर साथ में दारिद्रय भी दिया। दंड-शक्ति को पृथक किया और धन-शक्ति से दूर रखा। धन-शक्ति को दंड शक्ति से नहीं मिलने दिया। इस प्रकार जब तक यह संयमन और संतुलन ठीक तरह से काम संयमन और संतुलन ठीक तरह से काम करते रहे तब तक यह व्यवस्था भी सुचारू रूप से चली। किन्तु बाद में इस ओर दुर्लक्ष्य होने से तथा अन्य कारणों से यह व्यवस्था टूट गयी।

जन्म से जाति की सीमा- जन्म से अर्थात् आनुवंशिकता से गुण- सम्पदा आती है, इस प्रकार का विचार पूर्वजों ने किया, किन्तु उस काल में भी उन्होंने जन्मत: आने वाले गुणों की मर्यादा को समझा, इसलिये-

शूद्रोऽपि शीलसम्पन्नो गुणवान ब्राह्मणो भवेत्
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीन: शूद्रात् प्रत्यवरो भवेत्॥

अर्थात् शूद्र भी यदि शीलवान और गुणवान हो, तो

वह ब्राह्मण बन जाता है तथा ब्राह्मण यदि कर्महीन हो जाये तो वह शूद्र से भी नीच है। इसी प्रकार 'जात्या ब्राह्मण इति चेत् न' अर्थात् जन्म से ब्राह्मण होता है, ऐसा कहना उचित नहीं- यह बताते हुए ऋष्यशृंग, वशिष्ठ, विश्ववामित्र, अगस्त्य आदि ने अन्य जातियों मे जन्में लोग भी धर्माचरण के कारण ब्राह्मण ही हुए, यह स्पष्ट किया है।

पुराणों में ऐसी कथा है कि शूद्र स्त्री का पुत्र महीदास अपने गुणों के कारण द्विज बना तथा उसने 'ऐतरेय ब्राह्मण' की रचना की। जिनके पिता का पता नहीं, ऐसे बालक का उपनयन-संस्कार कर, उनके गुरु ने उसे द्विज बनाया- उपनिषद् की यह कथा भी प्रसिद्ध है। प्राचीन पद्धति में आवश्यक लचीलापन होने के कारण ही यह संभव हुआ होगा।

रोटी-बेटी व्यवहार- अपने यहाँ रोटी-बेटी व्यवहार शब्द प्रचलित है। पहले रोटी व्यवहार भी जाति तक ही सीमित था। किन्तु अब तो बन्धन टूट चुके हैं और रोटी-व्यवहार सभी जातियों में शुरु हो गया है। इस कारण जाति-भेद की तीव्रता कम होने में काफी मदद मिली है। अब विभिन्न जातियों के बीच बेटी-व्यवहार भी शुरु हो गया है। यह अधिक पैमाने पर हुआ तो जाति- भेद समाप्त करने तथा सामाजिक एकरसता निर्माण होने में वह अधिक सहायक होगा, यह स्पष्ट ही है। अत: रोटी-बेटी के बंधनों का टूटना स्वागत-योग्य है। किन्तु बेटी व्यवहार, रोटी व्यवहार जैसा आसान नहीं है। यह बात सभी को ध्यान में रखकर, संयम न खोते हुए, धैर्य से आचरण करना चाहिये। विवाह करते ही अच्छी जोड़ी का विचार होना स्वाभाविक है। अत: ऐसे विवाह शैक्षणिक, आर्थिक और जीवन-स्तर की समानता के आधार पर ही होंगे। जिस मात्रा में लोगों के निवास की बस्तियाँ एक स्थान पर होकर साथ-साथ रहने की प्रवृत्ति बढ़ेगी, समान शिक्षा-सुविधा के साथ लोगों का जाति- निरपेक्ष स्तर ऊँचा उठेगा, उतनी मात्रा में ही यह स्वाभाविक रूप से संभव हो सकेगा। कानून बनाकर अथवा धन का लालच दिखाकर यह संभव नहीं। न ही यह कोई जल्दबाजी का विषय है। यह बात सभी को ध्यान में रखनी चाहिये।

अस्पृश्यता एक भयंकर भूल- अस्पृश्यता अपने समाज की विषमता का एक अत्यंत दुखद और दुर्भाग्यजनक पहलू है। विचारशील लोगों का मत है कि अति प्राचीनकाल में भी इसका अस्तित्व नहीं था तथा काल के प्रवाह में यह किसी अनाहूत की भांति समाविष्ट होकर रूढ़ बन गयी। वास्तविकता कुछ भी हो, किन्तु हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि अस्पृश्यता एक भयंकर भूल है और इसका पूर्णतया उन्मूलन आवश्यक है। हम सभी को यह सोचना चाहिये कि यदि **'अस्पृश्यता गलत नहीं है, तो कुछ भी गलत नहीं है।'** अत: हम सभी के मन में सामाजिक विषमता के उन्मूलता का ध्येय अवश्य होना चाहिये। हमें लोगों के सामने यह स्पष्ट रूप से रखना चाहिये कि विषमता के कारण हमारे समाज में किस प्रकार दुर्बलता आयी और उसका विघटन हुआ। उसे दूर करने का उपाय बतलाने चाहिये तथा इस प्रयास में हरेक व्यक्ति को अपना योगदान देना चाहिये।

धर्माचार्यों से अनुरोध- अपने धर्मगुरु, संत, महात्मा और विद्वानों का जनमानस का प्रभाव है। इस कार्य में उनका सहयोग भी आवश्यक है। हमारा उनसे यही अनुरोध है कि वे लोगों को अपने प्रवचनों-उपदेशों द्वारा यह बतायें कि अपने धर्म के शाश्वत मूल्य कौन से हैं तथा कालानुरुप परिवर्तनीय बातें कौन-सी हैं? शाश्वत-अशाश्वत का विवेक रखने वाले सभी आचार्यो, महंतों और संतों की आवाज देश के कोने-कोने में फैलनी चाहिये। समाज की रक्षा का दायित्व हमारा है और वह मठों से बाहर निकलकर समाज-जीवन में

घुल-मिलकर रहने से ही पूर्ण होगा, ये बातें उन्हें समझनी चाहिये। उनके प्रयास प्रारम्भ होने के शुभ संकेत भी मिलने लगे हैं। हमारे दिवंगत सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने ऐसे सभी संत-महात्माओं को एक साथ लाकर, उन्हें इस दृष्टि से विचार करने हेतु प्रवृत्त किया था। इसी का यह सुफल है कि अनेक धर्मपुरुष तथा साधु-संत समाज के विभिन्न घटकों में घुलने-मिलने लगे और धर्मांतरित बांधवों को स्वधर्म में शामिल करने को तैयार हुए।

योग्य दिशा योग्य प्रकार- हिन्दू समाज के किसी भी वर्ग को अन्याय व अत्याचार का पुतला कहकर कोसते रहना, अपमानित करना, आत्महत और तेजोहत करना कदापि उचित नहीं, उनका आत्मबल बनाये रखकर नये प्रकार के अच्छे सामाजिक व्यवहार के उदाहरण और आदर्श उनके सामने रखे जाना आवश्यक है। संघ के संस्थापक आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार के साथ काम करने का सौभाग्य मुझे मिला है। वे कहा करते थे- 'हमें न तो अस्पृश्यता माननी है और न उसका पालन करना है।'

संघ शाखाओं और कार्यक्रमों की रचना भी उन्होंने इसी आधार पर की। उन दिनों भी कुछ और ढंग से सोचने वाले लोग थे। किन्तु डॉक्टरजी को विश्वास था कि आज नहीं तो कल, वे अपने विचारों से सहमत होंगे ही। अत: उन्होंने न तो उसका ढोल पीटा और न किसी से झगड़ा किया, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि दूसरा व्यक्ति भी सत्प्रवृत है। यदि उसे समय दिया गया तो वह भी अपनी भूल निश्चित ही सुधार लेगा। प्रारम्भिक दिनों में, एक संघ-शिविर में कुछ बन्धुओं ने महार (हरिजन) बंधुओं के साथ भोजन करने मे संकोच व्यक्त किया। डॉक्टर जी ने उन्हें नियम बताकर शिविर से निकाला नहीं। सभी अन्य स्वयंसेवक, डॉक्टरजी और मैं एक साथ भोजन के लिये बैठे। जिन्हें संकोच था वे अलग बैठे। किन्तु उसके बाद दूसरे भोजन के समय ही वे ही बन्धु हम सभी के साथ बैठे।

सबके साथ भोजन करुँगा- इससे भी अधिक उद्‌बोधक उदाहरण मेरे मित्र पं. बच्छराज जी व्यास का है। जिस शाखा का मैं प्रमुख था, उसी शाखा के वे स्वयंसेवक थे। उसके घर का वातावरण पुराना, कट्टरपंथी होने के कारण, वे उन दिनों मेरे यहाँ भी भोजन के लिये नहीं आते थे। जब वे पहली बार संघ शिविर में आये, तब उनके भोजन की समस्या खड़ी हो गयी। सब लोगों को एक साथ तैयार किया गया तथा परोसा गया भोजन उन्हें नहीं चलता था।

मैंने डॉक्टरजी से पूछा तो उन्होंने नियम बताकर बच्छराज जी को शिविर में आने से नहीं रोका। क्योंकि उन्हें बच्छराज जी के संबंध में विश्वास था कि उनमें उचित परिवर्तत अवश्य होगा। अत: उन्होंने मुझे कहा कि बच्छराज जी को शिविर में आने दो। हम उन्हें अलग रसोई पकाने की छूट देंगे। पहले साल तो यही हुआ, किन्तु दूसरे वर्ष स्वयं बच्छराज जी ने कहा कि मैं भी सब लोगों के साथ ही भोजन करूँगा। बाद में वे जैसे-जैसे संघकार्य में रमते गये वैसे-वैसे उनके व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन हुआ, यह सर्वविदित है। वे संघ के एक निष्ठावान कार्यकर्ता बने और राजस्थान के अनेक वर्षो तक प्रान्त-प्रचारक के नाते कार्यरत रहे। बाद में वे भारतीय जनसंघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष भी रहे।

आलोचना नहीं सहयोग- दलित अथवा अस्पृश्य माने गये बन्धुओं ने काफी अत्याचार व कष्ट सहन किये हैं। अत: यह अभिप्रेत है कि अन्याय समाप्त होकर, उन्हें सबके साथ समानता का स्थान प्राप्त हो, अत: सभी लोगों को इस दृष्टि से प्रयास करना चाहिये। उन प्रयत्नों के लिये पोषक भाषा का उपयोग और आचरण होना ही आवश्यक है। समाज की अन्यायपूर्ण तथा बुरी बातों की निंदा अथवा आलोचना तो अवश्य होनी चाहिये।

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

आगरा नगर निगम, आगरा

महानगर वासियों से अपेक्षा करता है

1. नगर निगम के टोल फ्री नं॰ 1800-180-3015 पर 24x7 तथा शासन की बेवसाइट www.e&nagarsewaup.gov.in/ulbapps पर अपनी समस्या/ शिकायत दर्ज कराने की सुविधा का उपयोग करें।
2. जन्म-मृत्यु पंजीकरण हेतु बेबसाईट www.crsorgi.govin पर जाकर जन्म-मृत्यु पंजीकरण करायें तथा प्रमाण पत्र प्राप्त करें।
3. अपना गृहकर/सम्पत्ति-कर जमा करने हेतु नगर निगम की www.agrapropertytax.com बेवसाईट का प्रयोग करें तथा अपना बहुमूल्य समय बचायें। समय से गृहकर जमा कर, नगर के विकास में सहभागी बनें।
4. पर्यावरण जनजागरुकता को अभियान का रूप दें।
5. पॉलीथिन का प्रयोग न करें। आगरा शहर में सभी प्रकार की पॉलीथिन का प्रयोग पूर्णतया प्रतिबन्धित है।
6. अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगायें।
7. खुले स्थानों पर अथवा नाले-नालियों में कूड़ा न डालें तथा निर्धारित स्थानों पर ही कूड़ा डालें।
8. यमुना नदी में पूजन सामग्री/मूर्तियाँ एवं अन्य सामग्री न डालें तथा नदी को स्वच्छ बनाये रखने में सहयोग दें।

आगरा महानगर को स्वच्छ, सुन्दर, हरा-भरा तथा प्रदूषण से मुक्त रखने में सहयोग दें।

इन्द्र विक्रम सिंह	समस्त पार्षदगण	इन्द्रजीत आर्य
नगर आयुक्त	आगरा नगर निगम, आगरा	महापौर

समरसता के प्रवाहक

श्रीस्वामी रामानन्द

–सुमंत डोगरा

हिन्दू समाज में सामाजिक व धार्मिक परिर्तन कर समरसता की धारा बहाने वाले स्वामी रामानन्द युग की सर्वमान्य सर्वपूज्य विभूति हैं। वे युग के चमत्कारी क्रांतिकारी संत हैं। जिनकी हिन्दू समाज में प्रभावी परम्परा आज तक चल रही हैं जिन्होंने हिन्दू धर्म परम्परा में एक नये युग का सूत्रपात किया।

तत्कालीन परिस्थितियाँ– आठवी शताब्दी में इस्लामिक आक्रमण सिंध पर हुआ और यह सिलसिला भारत का निरन्तर चलता रहा। हिन्दू समाज के इतिहास में हमला अत्यंन्त विध्वंसकारी एवं एक नये प्रकार का था। इन पाशविक इस्लामी हमलावरों ने सिर्फ राजनैतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक व धार्मिक परम्पराओं को गंभीर रूप से आहत किया। यह राजनैतिक प्रभुत्व व लूट का धार्मिक अभियान (जिहाद) था।

जहाँ, तर्क, विचार, सिद्धांत और मानवता का कोई स्थान नहीं था। मंदिरों को तोड़ा गया, विग्रहों को खंडित किया गया, गुरुकुल, आश्रम, मठ आदि को भी नष्ट किया गया। धार्मिक पुस्तकों को जलाया गया। धर्म के नाम पर कत्लेआम किया गया।

इस्लाम का आगमन जहाँ राजनैतिक रूप से एक नये ढंग की चुनौती थी वहीं धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्र में भी एक नये प्रकार का संकट खड़ा हो गया क्योंकि हमलावर क्रूर, निर्दयी, अत्याचारी होने के साथ-साथ महामूर्ख भी था, इसने अपनी इस्लामिक मान्यताओं और व्यवहार को कट्टरता के साथ थोपा।

हिन्दू धर्म के लिये यह संकट की स्थिति थी। जहाँ मंदिर, गुरुकुल आश्रम नष्ट हो गये हों। धार्मिक आचार्यों, गुरुओं का कत्ल हो गया हो। हिन्दू राज्य का संरक्षण समाप्त हो गया हो वहाँ धार्मिक परम्परा, पूजा, अनुष्ठान, साधन व उपासना का भी विखण्डन होना स्वाभाविक था।

ऐसे संकट काल में हिन्दू समाज के समक्ष दो चुनौतियाँ प्रमुख रूप से थी। प्रथम- तलवारधारी, मूढ़, इस्लाम का मुकाबला करने के लिये युगानूकूल धार्मिक व्यवस्थाएं स्थापित करना।

दूसरा- निरन्तर इस्लामिक आक्रमणों व पराजय से व्याप्त हिन्दू समाज में निराशा को समाप्त कर, उसमें एकता व आत्मविश्वास जागृत करना।

इस इस्लामिक आंधी का प्रतिरोध सर्वप्रथम नाथ सम्प्रदाय के जोगियों व अवधूतों ने किया। (900-1600) हिन्दू समाज के रक्षण में महत्वपूर्ण योगदान किया। अन्य सम्प्रदाय के साधू, संन्यासी, जोगी अपने-अपने ढंग से प्रयासरत रहे। लेकिन मुस्लिम आक्रांत अब राजनैतिक रूप से स्थापित हो चुके थे और उनका इस्लामिक अत्याचार हिन्दू समाज के लिये स्थायी संकट बन गया था। ऐसे समय में स्वामी रामानन्द जी का आगमन हुआ।

स्वामी रामानन्द-जीवन परिचय- स्वामी जी का

जन्म प्रयाग में हुआ। बचपन में काशी चले आये और वहीं रहकर सभी शास्त्रों का अध्ययन पूर्ण किया। स्वामी राघवानन्द से संन्यास की दीक्षा ली। काशी के पंचगंगा घाट पर रहकर अपना तपस्वी जीवन प्रारम्भ किया। आपकी प्रतिष्ठा काशी में सभी संतों विद्वानों में थी आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान व शास्त्रों के मर्मज्ञ थे। इन्होंने अपने जीवन काल में दिल्ली के नौ सुल्तानों का राज देखा। (जलालुद्दीन खिलजी, फिरोज, इब्राहीम, प्रथम, नसीरुद्दीन, ग्यासुद्दीन, तुगलक, मोहम्मद तुगलक, अबूबकर, नुसरत, दौलत खाँ लोदी आदि)

निश्चित रूप से स्वामी रामानन्द जी ने मुस्लिम शासकों के अत्याचारों, क्रूरताओं, धार्मिक कट्टरताओं, लूटमार को देखा होगा। उन्होंने हिन्दू समाज में निराशा और उसके धर्मसंकट को भी देखा होगा।

स्वामी रामानन्द अपने समय के चमत्कारी संत माने जाते थे। इसका वर्णन एक मुस्लिम फकीन ने अपनी पुस्तक में इस तरह किया हे- 'इस काशी में पंचगंगा घाट पर एक प्रसिद्ध महात्मा रहते हैं। तेज पुंज और पूर्ण योगेश्वर हैं, वैष्णवों के सर्वमान्य आचार्य हैं। परमात्मा रहस्य के पूर्ण ज्ञाता हैं। सदाचार व ब्रह्मनिष्ठ के स्वरूप हैं। सच्चे भगवत्प्रेमियों एवं ब्रह्मविदों के समाज में उत्कृष्ट प्रभाव रखते हैं। अपितु धर्माधिकार में वे हिन्दुओं धर्मकर्म सम्राट हैं.... इन पवित्र आत्मा को स्वामी रामानन्द कहते हैं।'

मतमतान्तर एकता व भक्तिधारा के प्रवाहक- स्वामी रामानन्द जी हिन्दू धर्म शास्त्रों, सिद्धांतों, दर्शन आदि के प्रकाण्ड विद्वान थे। लेकिन उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार शास्त्र अनुमोदित भक्तिधारा को प्रवाहित किया। भक्ति का अर्थ है ईश्वर की शरण में जाना और ईश्वर का भजन, मनन, चिन्तन करना। स्वामी जी को निर्गुण निराकार या सगुण साकार पर भेद नही करते थे। उनके पास सभी धारा के लोग आते थे।

भक्ति की यह परम्परा दक्षिण में स्वामी रामानन्द ने प्रारम्भ की जिसे स्वामी रामानन्द जी ने उत्तर भारत में प्रसारित किया। यह उक्ति प्रसिद्ध है-

भक्ति उपजी द्रविड़ लाए रामानन्द,
प्रकट कियौ कबीर ने सप्तद्वीप नौ खण्ड

भक्ति धारा की प्रमुख विशेषताएँ-ईश्वर की शरणागति के लिये सभी समान अधिकारी है। स्वामी जी ने स्पष्टता से कहा कि भक्ति में जाति-पाति के भेद व्यर्थ हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र सभी हरिशरण के लिये अधिकारी हैं।

स्वामी जी ने अपने ग्रंथ वैष्णव मताण, भास्कर में स्पष्ट लिखा है- ईश्वर के द्वार, राजा, रंक, निरक्षर, अशक्त, विपत्र, स्त्री, चाण्डाल, सबके लिये खुले हैं। जाति, कुल, वर्ण, शक्ति, धन का महत्व नहीं हैं। ईश्वर के आगे आत्मसमर्पण ही साधना का प्रमुख आधार है। स्वामी का यह कथन प्रसिद्ध है-

जाति-पांति पूछे नहि कोई, हरि को भजै सो हरि को होई।

स्वामी जी श्री वैष्णव लक्षण निरुपणम में कहा कि श्री विष्णु पंचायुध धनुष, बाण, गदा, खड़ग, तूणीर, चिह्न के अंकित कोई भी वैष्णव चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र या स्त्री या अन्य कोई भी हो वह साक्षात् विष्णु स्वरूप ही है। वह जगत में पवित्र वस्तु को भी पावन करने वाला है।

स्वामी जी की व्यवहारिकता- स्वामी रामानन्द जी तत्कालीन परिस्थितियों के भलीभांति परिचित थे। इसलिये उन्होंने केवल सैद्धांतिक उपदेश नहीं दिये बल्कि उन्होंने उसे लोक व्यवहार में लाने के लिये अनुपम प्रयोग किये।

लोकभाषा का प्रयोग- स्वामी जी ने जहाँ संस्कृत साहित्य की रचनाएँ की हैं वहाँ आमजन के लिये लोकभाषा हिन्दी में भी उपदेश किया। साधना, उपासना, भजन के लिये, भक्ति के लिये, लोकभाषा को भी स्वीकार्यता प्रदान की।

इससे जनसाधारण के लिये भक्ति मार्ग सहज हो गया। बल्कि भक्ति मार्ग के उपासक-भक्त-ईश्वर-प्रेम, ईश्वर-प्रार्थना, ईश्वर-निवेदन, ईश्वर-कृपा के भाव से अपनी भाषा मे रचना करने लगे और यह परम्परा उनके शिष्यों ने आगे बढ़ाई और बहुत सारा भक्ति साहित्य रचा गया।

सामाजिक एकता व समरसता के पोषक- स्वामी रामानन्द जी ने जातिभेद, वर्णभेद न होने का उपदेश ही नहीं। उसे व्यवहार में भी दिखाया। उनकी शिष्य परम्परा में सर्वसमाज के लोग थे। उनके हजारों शिष्यों में बारह प्रमुख थे जो भिन्न-भिन्न जाति के थे।

अनंतानन्द, सुखानंद, सुरसरानंद, नरहर्यानंद, योगानन्द (ब्राह्मण), पीपा (राजपूत), कबीर (जुलाहा), रैदास (चमार), सेन (नाई), पदमावती, सुरसरी (महिलाएं) उनकी एक शिष्या वैश्या गंगा भी थी। इस परम्परा को उनके शिष्यों ने भी अपनाया, उनके यहाँ भी जाति-भेद वर्ण भेद नहीं था। उदा. कबीर के शिष्य पद्मनाथ (ब्राह्मण) रैदास की शिष्या-चितौड़ की रानी।

स्वामी जी एक मानवतावादी संत थे। उन्होंने सभी को एक ही राममंत्र देकर भक्ति के माध्यम से हिन्दू समाज में एक नये युग का प्रारम्भ किया।

मुस्लिम शुद्धि का प्रारम्भ- स्वामी रामानन्द अपने जीवनकाल में इस्लामिक आक्रांताओं द्वारा जबर्दस्ती या मजबूरन हिन्दुओं का मुसलमान बनते देखा था। पुरातन परम्परा के अनुसार एक बार म्लेच्छ बनने पर पुनः हिन्दू बनना असंभव सा था। स्वामी जी ने इस भ्रांत धारणा को समाप्त कर पुनः हिन्दू बनाने का कार्य शुरु किया। उन्होंने हजारों बलात् बने मुस्लिमों को विलोम मंत्र के द्वारा शुद्ध कर पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित कर लिया। यह इसलिये भी संभव हुआ कि वैष्णव समाज में जाति भेद, वर्णभेद नहीं था।

हनुमान पूजा का प्रारम्भ- स्वामी जी के समय त हिन्दू समाज में शैव, वैष्णव, शाक्त भेद आ गये मुसलमान के हमलों में मंदिर व परम्परा नष्ट हुई। स्वा जी ने सर्वसमाज के लिये एक सहज देवता हनुमान की पूजा अर्चना प्रारम्भ की। एक तो इनकी पूजा अधिक विधि- विधान की आवश्यकता नहीं थ दूसरा इनको कहीं भी स्थापित किया जा सकता थ दूसरा हनुमान जी शैव, वैष्णव दोनों के लिये स्वीकार्य थे।

स्वामी जी द्वारा हिंदी में रचित हनुमान जी आरती '**आरती की जै हनुमान लला की**' आज गाई जाती है।

सम्पूर्ण देश में जागरण- स्वामी रामानन्द जी भक्तिधारा को सिर्फ काशी तक सीमित नहीं रख उन्होंने इसे पूरे राष्ट्र में प्रवाहित करने का संकल्प किय तथा इस हेतु इन्होंने अपने प्रमुख शिष्यों को देश अन्य भागों में भेजकर अपने केन्द्र (पीठ) बनाने आदेश दिया। इस योजनानुसार सुरसानन्द को पंजा भावानन्द को महाराष्ट्र, नरहयानिन्द को ओडिसा, पी व योगानन्द का गुजरात भेजा। कबीर, रैदास अनन्तानंद काशी में ही रहे। आज श्री रामान सम्प्रदाय हिन्दू जगत में सबसे बड़ा सम्प्रदाय है जो भारत में फैला हुआ है।

इस प्रकार स्वामी रामानन्द जो हिन्दू समाज एकता व समरसता के लिये महान् कार्य किया है। उदयप्रताप के शब्दों में-युगाराध्य स्वामी रामानन्दाचार्य दलित शोषित तथा उपेक्षित नारी समाज के उत्थान कार्य सम्पन्न कर समाज में समरसता उत्पन्न की। अप सम्पूर्ण जीवन लोकमंगल तथा लोक कल्याण हेतु समर्पि कर हिन्दुत्व के अभ्युत्थानार्थ समाज को संगठित कर ए विशाल शक्ति का सृजन किया। उनका व्यक्ति सर्वस्पर्शी व्यापक और प्रेरणादायक था।

सामाजिक समरसता पर

गोस्वामी तुलसीदास जी के विचार

- डॉ. नीता सिंह
प्राचार्य, रतन लाल फूल कटोरी देवी,
स. बा. वि. मं., मथुरा

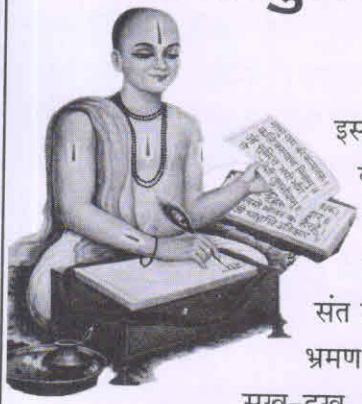

इस पृथ्वी पर प्रभु, तो कभी-कभी अवतार ग्रहण करते हैं किन्तु सन्त नित्यावतार हैं। संत तो समाज में निरंतर भ्रमण करते हैं, उनके सुख-दुख बाँटते हैं, आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं तथा सभी को प्रेम का सन्देश देते हैं। वे समाज को सत्य पर अधिष्ठित करते हैं। संत तो स्वयं दया, क्षमा, शान्ति तथा प्रेम की प्रतिमूर्ति होते हैं। सामान्य जन तो सन्तों को ही देखते हैं। ये सन्त लोग अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार से, समाज के दुर्गुण एवं कुरीतियों आदि को दूर करने की सामर्थ्य रखते हैं। तभी तो श्री चैतन्य महाप्रभु की हत्या करने के लिए आने वाला व्यक्ति भी हरिभक्त बन गया।

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि भगवान तो समुद्र की तरह हैं परन्तु सन्त लोग मेघ की भाँति हैं। समुद्र में अथाह जल है किन्तु वह प्यास नहीं बुझा सकता, न किसानों को जल दे सकता है किन्तु समुद्र जब मेघ रूप में बदल जाता है तब सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवन-वर्षा करता है। सन्त भी प्रेम और ज्ञान की वर्षा करते हैं। सन्तों का हृदय नवनीत समान होता है जो थोड़े से ताप से पिघल जाता है अत: सन्त जब किसी को थोड़े से भी दु:ख में देखते हैं तो उनका हृदय द्रवित हो जाता है।

तुलसीदास जी ने चारों धाम की यात्रा कर देशभर के हिन्दू समाज की दशा का गहराई से चिन्तन किया और पुन: काशी आकर रहने लगे। गोस्वामी तुलसीदास बड़ी कुशलता से, समाज के नीचे खड़े उपेक्षित निम्नवर्गीय व्यक्ति को वे समाज में सर्वोच्च व्यक्ति द्वारा प्रेमपूर्वक सम्मानित करवाते हैं तथा सामाजिक समसरसता का सन्देश देते हैं। भीलनी (शबरी), केवट, निषाद, जटायु, काकभुशुण्डि तथा हनुमान आदि सभी उस समाज में वंचित वर्ग के हैं। गोस्वामी तुलसीदास विविध प्रसंगों पर इन सभी का सम्मान दिलाते हैं।

शबरी भीलनी है राम उसके आश्रम पर जाते हैं, जूठे बेर खाते हैं तो शबरी गद्‌गद हो गई। प्रभु बारम्बार प्रसंशा भी कर रहे हैं। शबरी कहती है कि मैं तो अधम जाति की नारी हूँ और मन्द बुद्धि भी हूँ, मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ? प्रभु राम बोले- 'शबरी सुनो! मैं तो केवल एक ही नाता मानता हूँ वह है भक्ति का। जाति-पाँति, धन, परिवार, चतुराई आदि मेरे लिये कोई महत्व नहीं रखते। ऊँचे कुल या जाति वाला या धनवान व्यक्ति यदि भक्तिहीन है तो वह उसी प्रकार शोभाहीन है जिस प्रकार जलहीन मेघ होता है। अनेक स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास ने जाति-पाँति के संबंध में निर्गुण संतों की तरह ही अपने विचार रखे हैं। वहाँ जाति-पाँति का कोई अर्थ नहीं है, वह महत्वहीन हैं। वे कहते हैं कि मेरी जाति-पाँति अथवा किसी और की जाति-पाँति को क्या लेना-देना है।

जटायु सीताजी को बचाने में मारा गया। जिस प्रकार श्वसुर अपनी पुत्रवधू की प्राणरक्षा करता है, वही काम जटायु ने भी किया है, इस कारण भगवान

राम, जटायु को पिता के समान सम्मान देते हैं उसका अन्तिम संस्कार अपने हाथों पिता के संस्कार की तरह करते हैं- 'गिद्ध जैसे अधम पक्षी और मांसाहारी को भगवान राम ने एक योगी जैसी गति प्रदान कर दी।' हनुमान तो स्वयं अपने बारे में कहते हैं कि मैं तो सभी प्रकार से हीन उपद्रवी वानर ही तो था- ''कपि चंचल सबही विधि हीना।'' फिर भी प्रभु राम हनुमान को सभी स्थान पर सम्मान देते हैं। गोस्वामी तुलसीदास भी यह निश्चित कर देते हैं कि जहाँ भी रामकथा होगी वहाँ पर हनुमान का विग्रह अवश्य रहेगा। गोस्वामी तुलसीदास ने ग्राम-ग्राम में हनुमान मंदिरों की स्थापना करवायी। वे काकभुशुण्डि जिसको पक्षी 'चण्डाल' कहा गया है उसके द्वारा सम्पूर्ण रामकथा कहलवाते हैं। पक्षियों में अधम माने जाने वाले कौआ यह कथा कहते हैं तथा पक्षीराज गरूड़ श्रद्धापूर्वक रामकथा श्रवण करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम, ऋषि वशिष्ठ, भरत आदि के द्वारा विविध प्रसंगों के वर्णन से यह स्पष्ट कर दिया कि भक्ति में जाति-पाँति ऊँच-नीच को कोई स्थान नहीं है। रामभक्ति से कथित दलित कही जाने वाली जातियाँ भी तो विख्यात हो जाती हैं- ''पाई न केहि गति पतित पा राम भजि सुनु सठ मना। गणिका, अजामिल व्य गोध गजादि खल तारे घना।'' अर्थात् राम भजन से किसको सद्गति नहीं मिली वह तो पतितों को पा बनाने वाले हैं। गणिका (वैश्या), अजामि (नास्तिक), गोध (पतित पक्षी) और गजराज स राम नाम लेने से पवित्र हो जाते हैं फिर जाति आदि कोई भेद नहीं रहता। यवन, किरात, खस, स्व (चांडाल) आदि जो अत्यन्त पापरूप समझे जाते वे भी केवल एक बार राम नाम लेकर पवित्र हो जा फिर ऊँचे और नीचे का भेद कहाँ रह जाता तुलसीदास का उपदेश था कि राम घर-घर में पैदा तथा हिन्दू परिवारों में राम के परिवार की तरह प्रेम रहे। राम के इस कथानक को घर-घर पहुँचाने की से तुलसीदास विश्व के सफलतम संत हैं।

■■■

झलकियाँ....

स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिय

1. स्कूल गेम्स फैडरेशन ऑफ इण्डिया खेल मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त खेल संस्था है।
2. एस0जी0एफ0आई0 द्वारा 42 यूनिटों को मान्यता दी गई है जिसमे देश के सभी प्रदेश एवं केन्द्र शा प्रदेशों के खेल/शिक्षा विभाग एवं केन्द्रीय विद्यालय संगठन, विद्या भारती खेल संस्थान, नवो विद्यालय समिति, डी0ए0वी0 मैनेजमैण्ट कमैटी, इण्डियन पब्लिक स्कूल कॉफ्रेंस सी0बी0एस0ई0 स्पोर्ट्स आर्गनाइजेशन सम्मिलित है।
3. एस0जी0एफ0आई0 लगभग 55000 स्कूली खिलाड़ियों को राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभ कराती है।
4. एस0जी0एफ0आई0 के राष्ट्रीय खिलाड़ियों के लिये केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों ने सरक नौकरियों में रियायत दे रखी है।
5. एस0जी0एफ0आई0 2020 में होने वाले ऑलम्पिक खेलों के लिये खिलाड़ियों को तैयार कर रही जो कि भारत सरकार खेल मंत्रालय की प्राथमिकता सूची में है।
6. एस0जी0एफ0आई0 के अच्छे एवं पारदर्शी काम को देखते हुये भारत सरकार खेल मंत्रालय ने खे इण्डिया आयोजित कराने का उत्तरदायित्व एस0 जी0 एफ0 आई0 को दिया है।
7. एस0जी0एफ0आई0 ने पिछले दो वर्षों में लगभग 500 खिलाड़ियों को अर्न्तराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं प्रतिभाग कराया तथा 100 से अधिक मैडल भी प्राप्त किये।
8. एस0जी0एफ0आई0 इस वर्ष-2017 में हॉकी स्कूली एशियन चैम्पियनशिप, स्कूली वर्ल्ड क्रि चैम्पियनशिप एवं कॉम्बेट गेम्स (ताइक्वाण्डो, जूडो, कराटे एवं रेस्लिंग) का आयोजन भारत में रहा है।
9. एस0जी0एफ0आई0 देश के पिछडे, आदिवासी एवं वंचित क्षेत्रों में राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं व खेल माध्यम से राष्ट्रीय मुख्य धारा में जोडने का काम करता है।
10. एस0जी0एफ0आई0 पदमभूषण सतपाल के दिशा निर्देशन एवं अध्यक्ष पदमश्री सुशील कुम वर्किंग अध्यक्ष श्री एन0एम0 सोपल, महासचिव डॉ0 राजेश मिश्रा एवं ट्रेजरार श्री एस0आर0 कष अथक प्रयासों से उत्तरोत्तर प्रगति पर है।

पद्श्री सुशील कुमार
अध्यक्ष

नरेन्द्र एम सोपल
वर्किंग अध्यक्ष

डॉ. राजेश मिश्रा
महासचिव

एस. आर.
ट्रेजरार

Vijay Shivhare
President- **S.J.P. Mahanagar,** Agra
अध्यक्ष – भाजपा आगरा महानगर

Boby Shivhare

Ajay Shivhare
Secretary
Bharat Vikash Parishad, **(Navoday)**

Hotel Moti Palace

- *Shree Jee Inf. (P) Ltd.*
- *Shivhare Real Estate (P) Ltd.*
- *Shivhare Chain*
- *Umang Chain*
- *Pankhuri Chain*

Dhakran Crossing, M.G. Road, Agra - 282010
Phone : 0562 - 2260060, 2251299
Fax : 0562 - 2253653, Mob.: 9412260075, 9319940547

RADHABALLABH PUBLIC SCHOOL

Affiliated to CBSE, New Delhi

ADMISSION OPEN

Nursery to IX & XI

2017-18

Child for Real World

Shahganj, Agra

e-mail: rbpsagra@gmail.com

9956077137, 9837885005

9837885009, 9837890229

स्वामी रामानन्द जी के विचारों में समाहित सामाजिक समरसता

- डॉ. तेजपाल सिंह
Associate Professor
K.R. Degree Collage, Mathura

समाज रूपी श्रृंखला की शक्ति कुछ मोटी सुदृढ़ कड़ियों में नही बल्कि श्रृंखला की निर्बल कड़ियों में होती है, इसलिये श्रृंखला मजबूत और सुदृढ़ चाहिए अर्थात् समाज के प्रत्येक वर्ग का स्वस्थ होना आवश्यक है। अन्यथा समाजरूपी यह जंजीर कमजोर, घिसी हुई कड़ियों पर टूट जाएगी। मजबूत कड़ियाँ भी उस टूटने से होने वाली हानि से बच नहीं सकेंगी, यही हमारे देश और समाज के साथ हुआ है। ''आत्मवत् सर्वभूतेषु, अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्'' भारतीय संस्कृति के ये मूलमंत्र जब हमारी सामाजिक व्यवस्था में से लुप्त हो गए तो धर्मान्तरण की गतिविधियाँ बढ़ीं पर कई शक्तियों के कारण हमारे देश को गुलाम बनने का दुर्भाग्य झेलना पड़ा।

हमें भूलना नहीं चाहिए कि शस्यश्यामला हमारी मातृभूमि धनधान से परिपूर्ण थी। यहाँ माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती एवं शक्ति की देवी माँ दुर्गा की अपार कृपा थी। इस देश का ज्ञान भण्डार, इस देश की भौतिक एवं आर्थिक सम्पन्नता, इस देश के खनिज सम्पदा, विश्व की स्वार्थी एवं लालची दृष्टि में खटकने लगी। हमारी आर्थिक सम्पन्नता ही विश्व के लिए ईर्ष्या का कारण बनी। परिणाम स्वरूप पहले यवनों ने, फिर मुगलों ने और अंत में अंग्रेजों ने हमें परतंत्र करने में सफलता पाई। इसका मूल कारण हमारे समाज में कालान्तर में उत्पन्न हुआ संगठन शक्ति का अभाव तथा सामाजिक समरसता में आई दुर्बलता थी।

उत्तर भारत के भक्ति-आन्दोलन में स्वामी रामानन्द का अतुलनीय योगदान है। स्वामी रामानन्द अपने समय के प्रभावशाली पथ-प्रदर्शक के रूप में दिखलाई पड़ते हैं। सैकड़ों साधु-महात्माओं तथा काशी के विद्वानों को साथ लेकर भक्तिजागरण लोकसंस्कार तथा सामाजिक एकता के महत्वपूर्ण कार्य में ये जुट गए। उत्तर भारत में, भक्ति के प्रसार हेतु जैसा उल्लेखनीय और कल्याणकारी कार्य स्वामी रामानन्द ने किया वैसा ही अविस्मरणीय कार्य उन्होंने सामाजिक एकात्मता के लिए भी किया। जातिगत ईश्वर की उपासना करने का अधिकार सभी को है- ईश्वर के शरणागति के लिए सभी समान अधिकारी है।' **''जाति-पाँति पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का कोई''** का मन्त्र देने वाले स्वामी रामानन्द ने जातिगत भेदभाव दूर करने के लिए केवल प्रवचन नहीं दिये वरन् उन्होंने अपने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सभी जातियों के पच्चीस हजार शिष्यों की व्यापक शिष्य परंपरा भी खड़ी की। उन्होंने सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से उपेक्षित और शोषित मनुष्यों के उद्धार तथा कल्याण का संकल्प किया।

मुसलमान शासकों की क्रूर प्रकृति तथा हिन्दू समाज के ऊपर हो रहे अत्याचारों से वे दुखी थे। हिन्दू समाज के अन्दर एक भावना दृढ़ हो गयी थी कि कोई व्यक्ति हिन्दू से मुसलमान तो हो सकता है किन्तु मुसलमान से हिन्दू नहीं हो सकता। स्वामी रामानन्द ने हिन्दू समाज में फैली इस भ्रान्त धारणा को समाप्त कर पुनः हिन्दू बनाने का कार्य शुरू कर इसको शास्त्रीय मान्यता भी दिला दी। हिन्दू धर्म में सम्मान के साथ मान्यता प्रदान की। स्वामी रामानन्द को भारतीय

सांस्कृतिक-इतिहास के महानतम व्यक्तियों में से एक माना जाना चाहिए। चौदहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक, उत्तर भारत के अधिकांश धार्मिक आन्दोलन के स्रोत स्वामी रामानन्द ही थे। उनकी समन्वयात्मक बुद्धि के कारण जन सामान्य विभिन्न मतों का अनुयायी बनकर हिन्तुत्व की मूलधारा के साथ पुन: जुड़ गया। जन सामान्य तक पहुँचने का उनका प्रवेश-पथ भक्ति ही था और यह संदेश जनभाषा (हिन्दी) के माध्यम से अब लोगों के सम्मुख रखा जा रहा था। उनके प्रवचनों की भाषा संस्कृत न होकर हिन्दी हो गई थी।

स्वामी रामानन्द जी का मानना था कि देश में सुख समृद्धि बनी रहे। समाज का प्रत्येक घटक परस्पर सद्भाव से रहे, नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी, गिरिवासी सभी भारतमाता के पुत्र समरस भाव से रहें, सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्य प्रभावी हो, सामान्य जन सुखी एवं सुरक्षित अनुभव करें, व्यक्ति का शोषण न करें, न्याय पाना सबके लिए सुलभ हो, दंडाधिकारी न्याय धर्म का पालन करने वाला हो, शासन भ्रष्टाचार मुक्त हो, कृषक, शिक्षक, उद्योगपति, कर्मचारी सब अपना-अपना कार्य कर्तव्य भावना से करने वाले हों, सबल दुर्बल का शोषण न करें, जाति-पाति, पंथ, सम्प्रदाय में परस्पर सौहार्द्र हो, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र सतत् विकासोन्मुख हो, विश्व में देश का सम्मान हो। कोई भी सत्ता लोलुप या आतंकी समूह, कोई भी धर्मान्ध, कोई भी तानाशाह हमारी मातृभूमि पर आक्रमण करने का साहस न जुटा सके, इस हेतु परम आवश्यक है कि अपना समाज एक जुट, संगठित एवं कर्तव्यनिष्ठ हो।

अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि सामाजिक समरसता के लिए भारतीय जीवन मूल्यों को आचरणीय बनाने पर जोर देना चाहिए। समरसता की शुरूआत स्वयं से करनी होगी। ''हजार भाषाओं से ज्यादा अ एक कार्यकर्ता के व्यवहार का होता है।'' इसलि हमारा मन निर्मल हो, हमारा वचन दंशमुक्त हो, ह वचन से किसी को पीड़ा न हो, हम सबका व्यव सभी लोगों को अपना मित्र बनाने वाला होगा, समाज में समता का भाव विकसित होगा। देश विकास के लिए सामाजिक एकता की आवश्यक होती है और समाज में एकता के लिए आवश्यक सामाजिक समता। जब समता आयेगी तो सामाजि एकता अपने आप आयेगी। इसके लिए हमें प्र करना चाहिए।

■■■

नर सेवा नारायण सेवा

स्वामी विवेकानन्द कुछ दिन हिमालय किसी एकान्त स्थान पर रहकर तपस्या करना चा थे। वे अपने गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस पास पहुँचे और बोले 'गुरुदेव मैं तपस्या के लि हिमालय पर जाना चाहता हूँ। आपसे आशीर्वाद ले आया हूँ। परमहंस ने कहा, वत्स हमारे आस-पास क्षेत्र के लोग भूख से तड़प रहे हैं। चारों ओर अज्ञ का अंधेरा छाया हुआ है। यहाँ लोग रोते-चिल्लाते और तुम हिमालय की किसी गुफा में समाधि आनन्द में डूबे रहो, क्या तुम्हारी आत्मा स्वीकारेगी गुरुदेव के वाक्यों ने विवेकानन्द की आत्मा झकझोर डाला। उन्होंने उसी समय संकल्प लिया वह अपना शेष जीवन दरिद्र नारायण की सेवा लगायेंगे। विवेकानन्द ने गरीबों व असहायों की से को पूजा मानकर असंख्य लोगों को सेवा कार्यों लिये प्रेरित किया।

■■■

भगवान महावीर और सामाजिक समरसता

धरणेन्द्र जैन
श्रमण ज्ञान भारती, विद्यानिकेतन
जैन चौरासी कृष्णा नगर, मथुरा

अनादि प्रवर्तमान जैनधर्म के 24 वें तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी का समग्र जीवन एक सत्य की खोज और अमरतत्व की कहानी हैं। महावीर स्वामी ने अपना उपदेश मात्र जैनों को ही नहीं अपितु प्राणीमात्र के लिये दिया है। जैनधर्म में तीर्थकर भगवान की धर्म सभा को समवशरण कहा जाता है। समवशरण भगवान की वह धर्मसभा होती है जहां पर सभी जाति (मनुष्य, देव तिर्यच आदि) के जीव आकर समानरूप से धर्मश्रवण करते हैं। अर्थात् जहां सभी को समान शरण प्राप्त होती है। सभी को कल्याण का उपदेश दिया जाता है।

भगवान महावीर स्वामी ने कहा है कि जैनधर्म किसी जाति विशेष का नहीं अपितु जन-जन का धर्म हैं। उपरोक्त विषय में यह सूक्ति प्रचलित है कि- ''जैनधर्म किसका है:- जो पाले सो उसका है।'' अर्थात् जैनधर्म किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है अपितु उस प्रत्येक प्राणी का है जो इसका पालन करता है। इसमें किसी व्यक्ति की पूजा नहीं की गयी बल्कि व्यक्तित्व (गुणों) की उपासना की गयी है। तथा अहिंसा को परम धर्म कहा गया है।

जैनधर्म व्यक्ति स्वातंत्र्य और आत्म विकास का समर्थक धर्म है। उसमें न केवल मानव के जीवन और विकास की स्वीकृति है, अपितु वह जीवमात्र की व्याख्या करता है। अत: स्वयंमेव जैनधर्म के समता, समानता, स्वातन्त्रता पुरूषार्थ, अस्पृश्यता-निवारण और नारी सम्मान आदि मानवीय अधिकारों की रक्षा के सूत्र सुरक्षित हो गये हैं। भगवान महावीर ने कहा है कि 'एक्का मणुस्य जाई'- मनुष्य एक जाति है, उसमें ऊँच-नींच का भेदभाव नहीं किया जा सकता। आत्म विकास की दृष्टि से कोई भी व्यक्ति या जीव न हीन है और न विशिष्ट- 'णो हीणे णो अइरिक्ते'। अत: जैनधर्म मानव-कल्याण की व्यापकता लिये हुए है।

जैनधर्म के इतिहास में आदि तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव ने प्राणिमात्र के विकास और संरक्षण के लिये असि, मसि, कृषि, शिल्प, कला और वाणिल्य इन छह जीविकोपार्जन के साधनों का विधान किया। उन्होंने बिना लिंग भेदभाव के शिक्षा का अधिकार बेटे और बेटी दोनों के लिए माना। ऋषभदेव के बेटे बाहुबली ने अपने राज्य की स्वतंत्रता और स्वाधीनता की रक्षा के लिये अपने बड़े भाई भरत की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का विरोध किया, किन्तु इसके लिए अहिंसक प्रतीक साधनों को अपनाया ताकि निरपराधी, मानव, पशुधन आदि का हनन न हो। जैनधर्म के बाइसवें तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ ने व्यक्तिगत स्वार्थ और भोजन के स्वाद के लिए निरपराध पशु-पक्षियों के आहार का विरोध किया और तेइसवें तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ ने धार्मिक अनुष्ठानों में धार्मिक व्यक्तियों द्वारा की जा रही जीवहिंसा का विरोधकर सर्प आदि जंतुओं की रक्षा को प्राथमिकता दी।

भगवान महावीर का जीवन मानवीय मूल्यों और अधिकारों की रक्षा में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने हिंसक धार्मिक यज्ञों का विरोधकर प्राणीमात्र को जीने का अधिकार प्रदान किया। उन्होंने कहा कि कोई प्राणी किसी के घात द्वारा करना नहीं चाहता। सभी अपना पूरा जीवन जीने के आकांक्षा रखते हैं। जैसे हमें पीड़ा प्राप्त करना अप्रिय और सुख प्राप्त करना अच्छा लगता है, वैसे ही सभी प्राणियों का यही अनुभव है। अत: उनकी रक्षा की जानी चाहिये। भगवान् महावीर ने श्रावक के चार प्रकार के दानों में अभयदान की भी व्याख्या की। रोगमुक्त करना, किसी को भूखे नहीं सोने देना, सभी को शिक्षा के साधन प्रदान करना और प्राणी को निर्भयतापूर्वक जीने देना ये चार प्रमुख कर्तव्य थे सुसभ्य नागरिक के। भगवान् महावीर ने लिंग, जाति, वर्ण के आधार पर धर्म और शिक्षा के द्वार किसी के लिए बन्द नहीं किये। समाज के सभी वर्ग के लोग उनके शिष्य बन सकते थे। उत्तराध्ययनसूत्र में वर्णित मुनि हरिकेशी चांडाल की कथा अस्पृश्यता -निवारण का प्रबल उदाहरण है। नारी की स्वतंत्रता और सम्मान की कहानी है- सती चंदनबाला का जैन साध्वी संघ की प्रमुख बनना। जैनधर्म के विगत हजारों वर्षो के इतिहास में मानव-कल्याण के संरक्षण के कई उदाहरण उपलब्ध हैं। आज भी जैनधर्म नागरिक कर्तव्यों के परिपालन में अग्रणी है। जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांत इस दिशा में मार्ग प्रशस्त कर सकते है।

भगवान महावीर स्वामी ने अपने दिव्य उपदेश के माध्यम से सम्पूर्ण जगत् का कल्याण किया है। उन्होंने सामाजिक समरसता के लिये पांच सिद्धांत बताये हैं। जिन्हें ग्रहस्थ एकदेश रूप से पालन करता है। इसलिये अणुव्रत कहलाते हैं तथा साधक (मुनि) सर्वदेश (पूर्णरूप) से पालन करते हैं। इसलिये उनके महाव्रत कहलाते हैं। पांच सिद्धांत निम्न हैं- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

आत्मशक्ति की पहिचान- वर्तमान युग में समाज प्रत्येक वर्ग के विकास की बात कही जा रही है। दलि वर्ग और पिछड़े वर्ग को साधन सुविधा जुटाकर उ विकास के अवसर देने की चर्चा है। तीर्थकर महाव स्वामी ने कहा कि हमें इस जातिवाद की समस्या मूल तक पहुंचना चाहिए। हम श्रेष्ठ वर्ग में होने का भ्र पाल बैठे हैं। उन्होंने कहा कि जगत् में जाति से न क हीन है और न कोई विशेष, अतिरिक्त है। सबकी आत में एक समान विकसित होने की शक्ति है। अत: प्रत्ये व्यक्ति अथवा प्राणी सभी एक ही जीव-जाति के बाकी जातियां बनावटी हैं। व्यक्ति के कर्मों के अनुस उनके नाम हम रख देते हैं। भगवान् महावीर ने कहा अपने कर्म से व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र हो है, जन्म से नहीं।

कम्मुणा बंभणो होई, कम्मुणा होई खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होई, सुद्दो हवइ कम्मुणा॥

जो जैसे कर्म करता है, वह उस समुदाय व्यक्ति हो जाता है। कर्म से ही व्यक्ति महान बनता जाति से नहीं। समाज में व्याप्त वर्गभेद को मिटाते महावीर स्वामी ने लिंगभेद को भी नहीं माना। सम और धर्म, विद्या और शिल्प, शासन और संयम, स क्षेत्रों में पुरूष के समान नारी भी बराबर की हिस्से है। जैनधर्म ने व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए एक जहाँ आत्मविकास का पथ प्रशस्त किया, वहाँ दू ओर उसने लोक कल्याण के लिए सामाजिक मूल्यों भी सृजन किया है। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत तीनों मूल्य जैनधर्म के सामाजिक अनुसंधान परिणाम है। आत्मसाधना में रत जैन चिंतकों ने लौकि व्यवस्था के आधारभूत तत्वों की उपेक्षा नहीं व उनका अमर संदेश है कि अहिंसा की प्रति मनुष्य-मनुष्य में व्याप्त भेद को अस्वीकृत करने में

प्राणीमात्र को सम्मान देने में हैं।

प्राणी-सरंक्षण का मंत्र अहिंसा- जैनधर्म का समता, सर्वभूतदया, संयम जैसे अनेक शब्द अहिंसा आचरण के लिए प्रयुक्त हैं वास्तव में जहाँ भी राग-द्वेषमयी प्रवृत्ति दिखलायी पड़ेगी वहां हिंसा किसी न किसी रूप में उपस्थित हो जाएगी। संदेह, अविश्वास, विरोध, क्रूरता ओर घृणा का परिहार, प्रेम, उदारता, और सहानुभूति के बिना संभव नहीं है। प्रकृति और मानव दोनों की क्रूरता का निराकरण संयम द्वारा ही संभव है। इसी कारण जैनाचार्यों ने कहा कि मानव वैयक्ति और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में समता और शान्ति स्थापित कर सकता है। इस धर्म का आचरण करने का स्वार्थ, विद्वेष, संदेह और अविश्वास को कही भी स्थान नहीं है। व्यक्ति और समाज के संबन्धों का परिष्कार भी संयम या अहिंसक प्रवृत्तियों द्वारा ही संभव है।

अहिंसा समाजवाद और साम्यवाद की नींव है। लोग देश में समाजवाद-स्थापना की बात करते हैं। अहिंसा के उस महान् उद्घोषक ने आज से हजारों वर्ष पहले समस्त विश्व में समाजवाद स्थापित कर दिया था। विश्व के समस्त प्राणियों को समान मानना, न केवल मनुष्यों को , इससे भी बड़ी कोई समरसता होगी ? अहिंसा महाप्रदीप किरणें विकरित हो, उद्घोष करती हैं, उस महामानव की वाण गूंजती है- जो तुम अपने लिए चाहते हो, दूसरों के लिए, समूचे विश्व के लिए भी चाहो और जो तुम अपने लिए नहीं चाहते हो, उसे दूसरों के लिए भी मत करो, क्योंकि एक चेतना की ही धारा सबके अन्दर प्रवाहित होती है। अत: सबके साथ समता का व्यवहार करो, यही आचरण सर्वश्रेष्ठ है। इससे तुम्हारा जीवन विकास वासनाओं से मुक्त होता चला जाएगा और निष्पाप हो जाएगा।

भगवान महावीर की यही दृष्टि अहिंसा को इतना व्यापक बना देती है कि उसे समूचे विश्व के साथ संबन्ध स्थापित करने में देर नहीं लगेगी, क्योंकि उसने संसार से परायेपन को हटाकर अपनत्व जोड़ रखा है। संसार में परायेपन का ही अर्थ है- दु:ख तथा हिंसक करना और अपनत्व का अर्थ है- सुख एवं अहिंसा होना, क्योंकि जब समूचा विश्व की व्यक्ति का हो जाता है तो कौन उसे सत्यं, शिंव, सुन्दरं, नहीं बनाना चाहेगा ? अत: प्रत्येक प्रयत्नशील मानव को दु:ख के परिहार और सुख के स्वीकार के लिए जैन संस्कृति की मूल देन अहिंसा को अपने जीवन में उतारना होगा। इस संघर्षमय जीवन से संतृप्त मानव को अहिंसा की घनी और विशाल छाया में ही शान्ति मिल सकेगी, अन्यत्र नहीं।

अभय से अपरिग्रह, अशोषण- तीर्थंकर महावीर इस बात को भलीभांति जानते थे कि आर्थिक असमानता और अनावश्यक वस्तुओं का अनुचित संग्रह समाज के जीवन को अस्त-व्यस्त करने वाला है। इसके कारण एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शोषण करता है और उसको गुलाम बनाकर रखता है। मनुष्य की इस लोभप्रवृत्ति को मिटाने का अचूक उपाय है अपरिग्रह। परिग्रह के सब साधन सामाजिक जीवन में कटुता, घृणा और शोषण को जन्म देते हैं। अपने पास उतना ही रखना जितना आवश्यक है बाकी सब समाज को अर्पित कर देना अपरिग्रही पद्धति है। धन की सीमा, वस्तुओं की सीमा ये सब स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए जरूरी है। धन हमारी सामाजिक व्यवस्था का आधार होता है और कुछ हाथों में उसका एकत्रित हो जाना समाज के बहुत बड़े भाग को विकसित होने से रोकना है। समाज के चंद धनाढ्य लोगों का पैसा यदि गरीबों को बांट दिया जाए तो समूचे भारत देश से गरीबी समाप्त हो सकती है। ऐसे परिग्रह के विरोध में भगवान महावीर ने आवाज उठाई और अपरिग्रह के सामाजिक मूल की स्थापना की।

■■■

समरस समाज ही राष्ट्र की संजीवनी

– **अजय कुमार शर्मा** (कार्यालय प्रमु
श्रीजी बाबा स. वि. मं., जतीपुरा, गोव

एकत्व, समन्वय, शीतलता, समरसता यदि किसी भी समाज में देखने को, सुनने को, समझने को, दिल में उतारने को मिल जाए तो वह समाज कोई साधारण समाज नहीं अपितु इसकी गिनती स्वर्ग समान होती है जो अपने राष्ट्र के उत्थान में सर्वसहयोगी होता है और वह समाज सभी प्रकार के प्राणियों में जीव-जगत, वनस्पतियों में समान प्राण डालने का कार्य करता है जिसके मात्र प्रभाव से मृत कोशिका, पदार्थ, तत्व जीवन्त हो जाते हैं।

वह समाज उन्नति की ओर अग्रसर होता चला जाता है। समाज के उत्थान में अक्सर आर्थिक, मानसिक, बौद्धिक पर्यावरणीय गन्दगी कभी-कभी देखने को मिल जाती है जो कि समाज के वैभव को, समाज की आभा को धूमिल करने का इरादा अवश्य ही रखती हैं- कहते हैं कि **तेते पाँव पसारिए, जेती लम्बी सौर** अर्थात् आदमी को उतने ही पैर पसारने चाहिए जो अपनी चादर में समा जाएं, यानि कि औकात से ज्यादा नहीं परन्तु वह समाज को अपनी अधिक से अधिक शहजादापन को दिखाने के लिए कुछ ऐसे कार्य कर जाता है जिसमें कई गुना अधिक खर्च हो जाता है और इसकी भविष्य में भरपाई करना मुश्किल हो जाता है फिर क्या वह इस भरपाई को गलत तरीके से करता है। घर से चुराता है, समाज से चुराता है और एक दिन चुरा-चुराकर इतना धन अर्जित कर लेता है कि उस धन को खजाने में जमा करना उसके लिए दूभर हो जाता है तो फिर वह उस धन, सम्पत्ति जायदाद को इधर उधर छिपाता है। धन के प्रभाव से उसका घमण्ड चरम सीमा पर पहुँच जाता है प्रतारण, भय, अन्धकार उत्पीड़न बढ़ने लगता है। समाज में अस्थिरता की स्थिति प्र होने लगती है इसे शुद्धता पवित्रता करने के लिए सम समय पर समभाव के लिए अभियान चलाया जात इसे दूर करने में समय तो लगता है। उपहास उ पड़ता है, आलोचना होने लगती है। परन्तु अन्त में लोगों को कुछ हासिल नहीं होता है जो समाज को दू करने में लगे रहते हैं तो अन्त में अवश्य ही कहने ल हैं जो हुआ वह अच्छा ही हुआ और आगे भी अच्छा ह इस तरह से नकारात्मक सोच सकारात्मक बन जाती यह जागरूकता का यह अभियान प्रत्येक नागरिक समभाव की ओर ले जाता है।

जब समाज में सभी पर्व, धर्म, सम्प्रदाय के लो की सोचने, विचारने, समझने में समरूपता आ जाती तो उस समाज का एक एक कण, एक एक तत्व, ए एक पदार्थ स्वत: ही उज्जवलता की छाप छोड़ने लग है और उस समाज में सामाजिकता, मानसिकता समानता का प्रभाव सुदूर से ही दिखाई देने लगता है अ वह सभी की मन, वाणी, कर्म से प्रकट भी होता च जाता है क्योंकि समाज में प्रति नागरिक के जिह्वा समान एक ही स्वर होता है। खान-पान, रहन-स उढाव-पहनाव, चाल-चलन, आचार-विचार, सभी अपना एक उचित रस होता है सभी एक दूसरे के प्र कृतार्थ होते हैं एक दूसरे के पूरक होते हैं एक दूसरे प्रति संवेदनशील, समभाव, समकर्म के पर्याय बने र हैं।

समस्त ऋतुओं का समभाव अनुभव, ऋतुओं अनुसार समस्त कार्य, समस्त व्रत एवं त्यौहारों की ए सी झाकियाँ, एक साथ देवी देवताओं की पूजा अर्च

देव स्थलों की सजावट, शुभागमन शब्द, आनन्दमयी वातावरण, समस्त नागरिकों का एक साथ मिलन, एक दूसरे के मन को लुभाने वाले विचार, पारदर्शी आदतें, एक सभ्य समाज की रीढ़ होती हैं और इसमें एक सभ्य नागरिक का जन्म, उसकी देख रेख, उसकी परिपक्वता और सुसंगठित गठन होता है जो समाज में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी, शिक्षित-अशिक्षित, अपना-पराया, का कोई औचित्य स्थापित ही नहीं हो पाता है। ऐसा समरसता से भरा वातावरण या परिवेश जीवन जीने की उस कला को सिखाता है कि एक चित्रकार विभिन्न प्रकार के रंगों से अपनी चित्रकारी में सजीवता प्रदान करता है और उसकी कल्पना भरी यह चित्रकारी भविष्य में नव सन्देश प्रसारित करने वाली बन जाती है और उसकी यह कलाकारी वास्तविकता का रूप धारण कर लेती है क्योंकि वह अपनी इस चित्रकारी में दृश्य का इस तरह से चित्रांकन करता है कि उसमें समभाव, समज्ञान, समसन्देश, समाकृति, समावलोचन, समांकन, समचेतना चित्रांकित है। ठीक उसी प्रकार का समभाव, समरसता का भाव समाज में चित्रकार की भाँति चमत्कारी सिद्ध होता है और वह समाज उन्नति के मार्ग से होता हुआ उस वैभव की ओर अग्रसारित होता है जिसके लिए वह लम्बे समय से प्रयासरत था। तब वह स्वपरिश्रम की इस वेदी में, सकारात्मक ज्ञान की आहुति देता है तो उसे वृष्टि के रूप में समरसता की प्राप्ति होती है जिससे उसके आसपास का समस्त परिवेश हरा-भरा नजर आता है जिसमें होती तो केवल हरियाली ही हरियाली, खुशहाली ही खुशहाली, समृद्धि ही समृद्धि।

ऐसा उदारवादी, समरसतापूर्ण, सभ्य समाज अपने राष्ट्र के लिए एक प्रेरक का कार्य करता है और वह अपने राष्ट्र की संजीवनी बन जाता है।

■■■

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन

के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

सरस्वती विद्या मन्दिर सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल

डी - 1, कमला नगर, आगरा

निवेदक

रघुनन्दन प्रसाद अग्रवाल	सी.ए. महेन्द्र गर्ग	कुंजबिहारी द्विवेदी	अतिन बघेल
(अध्यक्ष)	(प्रबन्धक)	(प्रधानाचार्य)	(प्रधानमंत्री-छात्र संसद)

एवं समस्त विद्यालय परिवार

मानवता से बड़ी कोई जाति नहीं, सामाजिक-समरसता से बड़ा कोई धर्म नहीं।

- विनीत कुमार

सामाजिक विश्व में प्रेम, शांति, व संतुलन के साथ-साथ मनुष्य जन्म को सार्थक करने के लिए मनुष्य में मानवीय गुणों का होना अति आवश्यक है। प्रेम प्रभु का अमूल्य व दिव्य उपहार है। शुद्ध प्रेम में सभी मानवीय ही नहीं दिव्य गुणों का समावेश भी हो जाता है तो अनुचित नहीं होगा। आज हम देखते हैं कि जो कार्य किसी से न हो प्रेम से वह कार्य हो ही जाता है। यदि देखा जाये तो मनुष्य ही नहीं- जीव जन्तु भी दया करते हैं। मनुष्य की तो बात ही क्या.... उसके पास तो बुद्धि व विवेक दोनों ही हैं। क्षमा करना सदा मनुष्य की महानता को दर्शाता हैं। परन्तु क्षमा कायरता का रूप न ले इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

प्रस्तुत लेख में लेखक ने स्पष्ट किया है कि सामाजिक समरसता के लिए सभी भेदों से ऊपर उठने की आवश्यकता है। अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर समरसता और सहिष्णुता को स्थापित किया जा सकता है। अपनी समस्त प्रतिभाओं को मानवता के लिए समर्पित करने हेतु बल दे रहे हैं। - *सम्पादक*

सहनशीलता से व्यर्थ के झगड़े से मुक्ति मिलती है। यह दु:ख में स्थिर रहने की शक्ति प्रदान करता है। इस गुण से प्रभावित होकर मनुष्य अपने तन, मन, घर व समाज को साफ रखने का प्रयास करता है। सत्यता का गुण उच्च कोटि का गुण है। जिसका पालन उच्च आदर्श की ओर ले जाता है। विवेक गुण से मनुष्य उचित-अनुचित का बोध करता है। समरसता कोई विषय नहीं, वरन् एक भावभरी सच्चाई है, मान लीजिए किसी गाँव में एक जाति के 10 परिवार हैं यदि हम इनकी पाँच-सात पीढ़ी पहले की पड़ताल करें तो पायेंगे कि इनके पूर्वज एक ही हैं। इसी प्रकार जब हम सारी मानव जाति की पड़ताल करते चले जायें तो अन्त में कोई एक ही बचेगा जिसकी हम सब संतान हैं, वही हमारा मूल है। इसी को वेदों में कहा है, '**एकोऽहं बहु स्याम**' अर्थात् मैं एक से अनेक हो जाऊँ, यही सामाजिक समरसता का मूल है। इसी से पूरा विश्व संचालित होता है; और एक दूसरे को लाभान्वित करता है। जब हम सब का मूल और पूर्वज एक ही है तो ये विभेद कैसा? इस रहस्य को जानकर ही महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, गुरु नानक, महावीर स्वामी, संत कबीर, स्वामी विवेकानन्द, और भारतीय ऋषि-मुनियों ने समस्त मानव जाति के हित में कार्य किये सबके मूल में समस्त मानव जाति का कल्याण रहा है। इसी तरह से एक वैज्ञानिक भी यदि कोई अविष्कार करता है तो सारी मानवजाति उसका लाभ उठाती है। एडीसन, न्यूटन, आइन्स्टीन आदि के आविष्कारों से समस्त मानव जाति ने लाभ उठाया, संचार क्रांति (इंटरनेट) के विभिन्न माध्यम जैसे गूगल, ट्विटर, फेसबुक आदि के सूत्रधार भी कोई एक ही रहे किन्तु इसका लाभ जन-जन अर्थात् पूरा मानव समाज उठा रहा है।

पश्चिम का विज्ञान और पूर्व का अध्यात्म दो मिलकर एक हो जायें तो विश्व मानवता की कितनी बड़ी सेवा हो जायेगी। भारत के महात्मा गाँधी की अहिंसा के सूत्र को अमेरिका के मार्टिन लूथर किंग, रूस में टॉलस्टॉय ने अपनाकर वही सफलता अमेरिका और रूस में प्राप्त की। वैज्ञानिक अविष्कारों की तरह

ही आध्यात्म के सूत्र सिद्धांत भी सार्वभौमिक, सर्वजनहिताय और सर्वजनसुखाय ही होते हैं। इनका विस्तार करने में भारत की बड़ी भूमिका हो सकती है। व्यापारिक और वैज्ञानिक स्तर पर सारी दुनिया ''ग्लोबल विलेज'' के रूप में परिवर्तित हो चुकी है, अब जरूरत है, आध्यात्मिक स्तर पर एक होने की। इस एकत्व को ही हमारे ऋषि-मुनियों ने ''आत्मवत् सर्वभूतेषू'' और ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' कहकर सम्बोधित किया। भारत का योग विज्ञान, मंत्र विज्ञान, तंत्र विज्ञान, जैसी साधना पद्धतियाँ और आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, पतिव्रत-पत्नीव्रत धर्म, संयुक्त परिवार प्रणाली जैसे जीवन मूल्य यदि पूरी वसुधा में फैल जायें तो विश्व की अधिकांश आध्यात्मिक नैतिक, मानसिक, पारिवारिक सामाजिक समस्याओं का स्वत: ही समाधान निकल आयेगा। ये भारतवर्ष की पूरे विश्व की दी जाने वाली अद्‌भुत, अनुपम धरोहर या भेंट होगी। भारत के गायत्री मंत्र को विश्व मंत्र, गीता को विश्वग्रन्थ, वेदों को विश्व ज्ञान तभी बनाया जा सकता है। जब हम इन्हें अपने जीवन में धारण करें और जानें, समझें। इसके लिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है, ''उदार बनो।'' इसका एक मात्र आशय यह है कि हम जाति, क्षेत्र, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय, आदि संकीर्ण मानसिकताओं से ऊपर उठें और मानव मात्र के कल्याण के लिए परमार्थ भाव से कार्य करें। कहा गया है कि ''उदार चरित्र वाले के लिए यह सारा विश्व ही एक कुटुम्ब बन जाता है।'' आइए! हम सब अपने पूर्वज ऋषियों की भाँति इस पूरे जगत् अर्थात् मानव मात्र की सेवा करें। आज धार्मिक सहिष्णुता की बड़ी जरूरत आ पड़ी है। किन्तु यह लोगों की आस्था को बदलकर नहीं किया जा सकता है। इसका एक मात्र रास्ता यही है कि लोगों को दूसरे धर्म को मानने वालों के प्रति आदर भाव रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाये और व्यवहार में लागू किया जाये। अगर लम्बे समय तक इस सिद्धांत का पालन किया जाये तो वह दिन दूर नहीं जब एक विश्वधर्म की नींव पड़ जाये। संसार के जिन विचारकों ने इन विचारों तथा कार्यप्रणालियों को सोचा और निश्चय किया है, उनमें भारतीय विचारक सबसे आगे रहें हैं।

विचारों की पकड़ और चिंतन की गहराई में हिन्दू धर्म की तुलना अन्य सम्प्रदायों से नहीं की जा सकती। भारत के हिन्दू विचारकों ने जीवन मंथन कर जो नवनीत निकाला है, उसके मूलभूत सिद्धांतों में वह कोई दोष नहीं मिलता, जो अन्य सम्प्रदायों या मत-मजहबों में मिल जाता है। हिन्दू धर्म महान् मानव धर्म हैं; व्यापक है और समस्त मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। वह मनुष्य में ऐसे भाव व विचार जाग्रत करता है जिन पर आचरण करने से मनुष्य और समाज स्थायी रूप से सुख और शांति का अमृत-घूँट पी सकता है। हिन्दू संस्कृति में जिन उदार तत्त्वों का समावेश है, उनमें तत्त्वज्ञान के वे मूल सिद्धांत रखे गये हैं जिनको जीवन में ढालने से आदमी सच्चे अर्थों में मनुष्य बन सकता है। भारतीय संस्कृति कहती है, ''हे मनुष्यो!'' अपने हृदय में विश्व प्रेम की ज्योति जला दो, सबसे प्रेम करो। अपनी भुजाएँ पसारकर प्राणिमात्र को प्रेम की सरिता से सींच दो, विश्व प्रेम वह रहस्यमय दिव्य रस है जो एक हृदय से दूसरे हृदय को जोड़ता है। यह एक अलौकिक शक्तिसम्पन्न जादू भरा मरहम है, जिसे लगाते ही सबके रोग दूर हो जाते हैं। आदर्श और उद्‌देश्य के लिए जीना है, जब तक जियो विश्व हित के लिए जियो। जिस प्रकार वैज्ञानिक आविष्कार का लाभ पूरी विश्वमानवता को मिलता है, उसी प्रकार भारतीय धर्म अध्यात्म का लाभ भी पूरे विश्व समाज को मिलना चाहिए, जिसके पास जो ज्ञान, कला कौशल है, उसे पूरी मानवता को समर्पित करना ही सच्ची समरसता है।

■■■

सामाजिक समरसता का प्रश्न और महिलाएँ

संकलन - श्रीमती प्रियंकावीर, मथुरा

भारतीय संविधान पुरुषों व महिलाओं के बीच सामाजिक समानता या समरसता की बात करता है किन्तु वास्तविक रूप से आज भी महिलाओं के प्रति समाज में वास्तविक समरसता देखने को नहीं मिलती।

आधी आबादी कही जाने वाली नारी जिस पर किसी राष्ट्र का विकास निर्भर करता है, वर्तमान समय में जिस तरह से इनका शोषण हो रहा है, यह सामाजिक समरसता के बिन्दुओं पर अकल्पनीय एक ज्वलन्त प्रश्न है। वस्तुतः महिलाओं की सामाजिक स्थिति व भूमिका को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व अवश्य ही इस ओर इंगित करते हैं। प्रत्येक धर्म के धर्म ग्रन्थों में महिलाओं के सामाजिक अधिकारों व सरोकारों पर अनेकानेक तथ्य/प्रसंग/सूत्र व व्याख्याएँ प्राप्त होती है। किन्तु वास्तविकता परखने पर उनका प्रतिशत अल्प ही होता है।

प्राचीन काल में हिन्दू धर्म में निश्चित रूप से पुरूष व स्त्रियों को सामाजिक समानता का अधिकार था किन्तु धीरे-धीरे वैदिकोत्तर काल में नारी के सामाजिक अधिकारों व स्वतन्त्रता पर पुरुषों ने वैधानिक अंकुश लगाकर दीर्घकाल के लिए उसे तुच्छ व पराश्रित बना दिया।

इस्लाम में कुरान शरीफ पुरुष व महिलाओं को समानता का दर्जा देता है और वह स्त्रियों को धर्म के मार्ग में बाधक नहीं मानता। किन्तु यहाँ भी महिलाओं के लिए पर्दा प्रथा को सामाजिक प्रतीक बना दिया गया तथा पति को बहु विवाह एवं विवाह विच्छेद का एक पक्षीय अधिकार दिया गया, जो कहीं न कहीं महिलाओं के प्रति समरसता के भाव की पुष्टि नहीं करता।

ईसाई धर्म में महिलाओं को धार्मिक उत्सवों में भाग लेने का अधिकार है किन्तु चर्च के संगठन संबंधी दायित्व नहीं सौंपे जाते। बाइबिल में स्त्री को एक लुभाने तथा पथ भ्रष्ट करने वाली स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। हालांकि ईसाई धर्म में स्त्रियों पर कम निषेध हैं फिर भी पुरूषों की तुलना में उनकी हीन होने की संकल्पना विवाद से परे है।

भारतीय समाज का यह कटु यथार्थ है कि यहाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं पर नैतिक, शारीरिक व मानसिक तौर पर वंश, जाति, कुल, परम्परा आदि की पाबंदियाँ अधिक लगायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यदि वह अशिक्षित हो अथवा शिक्षित होकर भी उन्नत विवेक से रहित हो; बंद दिमाग की स्त्री हो तो उसकी दशा और भी शोचनीय हो जाती है। नारी स्वतन्त्रता युग के अनुकूल सामाजिक समरसता के अधिकार व मानव मूल्यों से वंचित है। स्त्री के हिस्से में आज भी त्रासदी है।

21वीं सदी में प्रवेश कर चुकी मानव सभ्यता में मानवीय अधिकारों की संहिताबद्ध स्पष्ट व्याख्या भी शामिल है। प्रत्येक मानव सत्ता के कुछ मूलभूत और अहरणीय अधिकार हैं और इन अधिकारों की

सामाजिक समरसता का प्रश्न और महिलाएँ

संकलन - श्रीमती प्रियंकावीर, मथुरा

भारतीय संविधान पुरुषों व महिलाओं के बीच सामाजिक समानता या समरसता की बात करता है किन्तु वास्तविक रूप से आज भी महिलाओं के प्रति समाज में वास्तविक समरसता देखने को नहीं मिलती।

आधी आबादी कही जाने वाली नारी जिस पर किसी राष्ट्र का विकास निर्भर करता है, वर्तमान समय में जिस तरह से इनका शोषण हो रहा है, यह सामाजिक समरसता के बिन्दुओं पर अकल्पनीय एक ज्वलन्त प्रश्न है। वस्तुतः महिलाओं की सामाजिक स्थिति व भूमिका को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व अवश्य ही इस ओर इंगित करते हैं। प्रत्येक धर्म के धर्म ग्रन्थों में महिलाओं के सामाजिक अधिकारों व सरोकारों पर अनेकानेक तथ्य/प्रसंग/सूत्र व व्याख्याएँ प्राप्त होती है। किन्तु वास्तविकता परखने पर उनका प्रतिशत अल्प ही होता है।

प्राचीन काल में हिन्दू धर्म में निश्चित रूप से पुरूष व स्त्रियों को सामाजिक समानता का अधिकार था किन्तु धीरे-धीरे वैदिकोत्तर काल में नारी के सामाजिक अधिकारों व स्वतन्त्रता पर पुरुषों ने वैधानिक अंकुश लगाकर दीर्घकाल के लिए उसे तुच्छ व पराश्रित बना दिया।

इस्लाम में कुरान शरीफ पुरुष व महिलाओं को समानता का दर्जा देता है और वह स्त्रियों को धर्म के मार्ग में बाधक नहीं मानता। किन्तु यहाँ भी महिलाओं के लिए पर्दा प्रथा को सामाजिक प्रतीक बना दिया गया तथा पति को बहु विवाह एवं विवाह विच्छेद का एक पक्षीय अधिकार दिया गया, जो कहीं न कहीं महिलाओं के प्रति समरसता के भाव की पुष्टि नहीं करता।

ईसाई धर्म में महिलाओं को धार्मिक उत्सवों में भाग लेने का अधिकार है किन्तु चर्च के संगठन संबंधी दायित्व नहीं सौंपे जाते। बाइबिल में स्त्री को एक लुभाने तथा पथ भ्रष्ट करने वाली स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। हालांकि ईसाई धर्म में स्त्रियों पर कम निषेध हैं फिर भी पुरूषों की तुलना में उनकी हीन होने की संकल्पना विवाद से परे है।

भारतीय समाज का यह कटु यथार्थ है कि यहाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं पर नैतिक, शारीरिक व मानसिक तौर पर वंश, जाति, कुल, परम्परा आदि की पाबंदियाँ अधिक लगायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यदि वह अशिक्षित हो अथवा शिक्षित होकर भी उन्नत विवेक से रहित हो; बंद दिमाग की स्त्री हो तो उसकी दशा और भी शोचनीय हो जाती है। नारी स्वतन्त्रता युग के अनुकूल सामाजिक समरसता के अधिकार व मानव मूल्यों से वंचित है। स्त्री के हिस्से में आज भी त्रासदी है।

21वीं सदी में प्रवेश कर चुकी मानव सभ्यता में मानवीय अधिकारों की संहिताबद्ध स्पष्ट व्याख्या भी शामिल है। प्रत्येक मानव सत्ता के कुछ मूलभूत और अहरणीय अधिकार हैं और इन अधिकारों की

प्रामाणिक व्याख्या 10 दिसम्बर 1948 से आरम्भ हुई, जिसके माध्यम से नयी विश्व व्यवस्था के आदर्श व मान्यता प्राप्त मूल्यों के रूप में स्थापित भी किया गया। इसके पश्चात् अधिकारों की व्याख्या का क्रम आगे बढ़ा। महिलाओं व बच्चों के अधिकारों, समानताओं से सम्बन्धित अनेक दस्तावेज लिखित व ठोस रूप में उपलब्ध होने पर भी सामाजिक समरसता के मुद्दे पर प्रश्न चिह्न लगते हैं जो तथ्यात्मक व सटीक भी हैं।

सदियों से लिंगभेदी मानसिकता के कारण आज भी महिलाओं को दोयम दर्जे का ही माना जाता है। इसी कारण कहीं भी महिलाओं को समान नागरिक समझने की उदारता नहीं दिखाई पड़ती। घर, परिवार, समाज तथा सार्वजनिक जीवन में भी महिलाएँ जीवन में भी अपने अधिकारों की पूर्ति के लिए पुरुषों पर ही निर्भर रहती हैं। ऐसे में उन्हें 33% या 50% भी आरक्षण दिया जाये तो कोई विशेष कृपा का विषय नहीं मानना चाहिए। यद्यपि कानून तो महिलाओं की बढ़ चढ़ कर पैरवी करता है, परन्तु सामाजिक समरसता बनाये रखने के मुद्दे पर समझौता महिलाओं को ही करना होता है अन्यथा अनेक रूपों में सामाजिक विकृतियाँ सामने आती हैं। वस्तुतः लोकतन्त्र और संविधान महिलाओं को जो अधिकार देता है, उसे समाज नहीं दे रहा है। यह समुदाय उत्पादकता की रीढ़ है किन्तु समाज में उसकी सफलता व समानता का प्रतिशत बहुत कम ही है।

आज प्रश्न यह है कि स्वतन्त्र भारत के तथाकथित स्वतन्त्र नाद के नीचे वह सब कुछ मौन ही रह गया, जो शायद इस स्वतन्त्र भारत की पहली आवाज है। हाशिये के बाहर पड़ा महिला समाज आज आत्म सम्मान तथा बहिष्कृत जीवन से मुक्ति पाने का संघर्ष कर रहा है। सामाजिक समरसता के प्रश्न के हल न होने पाने का सीधा दोष राजनीतिज्ञ तथा संवैधानिक घोषणाएँ करने वाले तथा कथित बुद्धिजीवियों एवं कहीं न कहीं समाज के उन अगुआओं पर भी है, जो आज तक महिला की सामाजिक सहभागिता आदि की सच्चे अर्थों में आवाज नहीं बन सके।

इस नयी सदी में महिलाएँ इस पारिभाषिक शब्द 'सामाजिक समरसता' को वास्तव में प्राप्त कर सकें, इस उम्मीद के साथ कि उनके लिए भी उनके हिस्से की जमीन तथा धूप सिर्फ उनकी होगी तथा वे भी सत्यतः समरसता की नजरों से देखी जायेंगी। केवल नियमों व कानून की कठोर जंजीरों में जकड़कर इसे समाज में प्रसारित नहीं किया जा सकता बल्कि महिलाओं को भी समान मानते हुए उनके प्रति युगों से भरी क्रूर भावनाओं के नाश तथा समता के निर्मल जल से सिंचित करके उनके प्रति सामाजिक समरसता के प्रश्न को हल करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

■■■

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन
के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

होटल एवरग्रीन

53/114, किशनगढ़ ईदगाहगाह कॉलोनी, आगरा

प्रो. अशोक सिंघल

सामाजिक समरसता के पुरोधा

प्रस्तुतकर्ता- करूणा शंकर शुक्ला
उपाध्यक्ष-भारतीय शिक्षा समिति ब्रज प्रदेश

वैदिक काल की समाज व्यवस्था में सामाजिक भेदभाव का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। वेद उपनिषद् गीता आदि ग्रन्थों में अस्पृश्य शब्द दिखाई नहीं देता है। वैदिक ऋषि सम्पूर्ण मानव, समाज को मिलकर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए सभी को संघटित रहकर गौरवशाली राष्ट्र के निर्माण की कल्पना करते हैं।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानता।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।ऋ.
समानो मंत्रः समितिः समानी।
समानं मनः सह चित्रमेषां।। ऋ०
समानी व आकूति समाना हृदयानि बः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति। ऋ०

हे मनुष्यों! तुम सब मिलकर चलो, मिलकर बातचीत करो। तुम्हारे मन एक सा विचार करें। जैसे पहले विद्वान सम्यक जानते हुये अपने धर्म का पालन करते थे, वैसे तुम भी करो।

तुम्हारे मन या विचार एक हों, और तुम्हारी सभा एक हो, तुम्हारा मनन एक सा हो और तुम्हारा चित्त एक सा हो।

तुम्हारा अभिप्राय एक हो, तुम्हारे हृदय एक हों, तुम्हारा मन एक हो, जिससे तुम्हारा पूर्ण रूप से संघटन हो।

इस सुन्दर व्यवस्था के चलते भारत ने समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में विलक्षण उन्नति की जिस कारण भारत विश्व गुरू एवं सोने की चिड़िया कहलाया।

वाह्य आक्रमणकारियों से निरन्तर संघर्ष के कारण संस्कारित तथा संघठित समाज का ताना बाना बिखर गया। संघर्षशील हिन्दू जातियाँ प्रताड़ित की जाने लगीं और इनका सामाजिक स्तर भी गिरता चला गया। धीरे-धीरे हिन्दू समाज में सम्मान प्राप्त संघर्ष शील गोंड़ पासवान, सोनकर, वाल्मीकि आदि जातियाँ अनुसूचित जातियों में सम्मिलित कर दी गयीं। विगत एक हजार वर्षों में हजारों जातियों का निर्माण हो गया। साथ ही जातिगत भेद-भावों ने जन्म लिया और स्पृश्य-अस्पृश्य के भाव ने सामाजिक विकृतियाँ उत्पन्न कर दी।

इन विकृतियों के विरूद्ध संघर्ष करने की एक महान परम्परा सम्पूर्ण देश में एक साथ प्रारम्भ हुई। देश को सभी प्रान्तों में सन्त भक्ति भाव लेकर खड़े हो गये और इन्होंने इन सामाजिक भेदभावों को मानने से इनकार कर दिया तथा समाज को एक सूत्र में बाँधने के लिये सम्पूर्ण देश में भक्ति आन्दोलन खड़ा कर दिया।

इस देश की आत्मा राज्यसत्ता में नहीं वरन् धार्मिक आस्थाओं में केन्द्रित रहती है। जब भी देश पर परकीयों के आक्रमण हुये तो जनता में आत्मविश्वास जगा कर उन्हें एक सूत्र में बाँधकर सन्तों ने समाज का मार्ग दर्शन किया।

ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध ने सामाजिक भेद-भाव करने वाली मान्यताओं को अस्वीकार कर नयी सामाजिक क्रान्ति ला दी। जब बौद्ध धर्म में विकृति आने लगी तो भी शंकराचार्य प्रचण्ड शक्ति के साथ प्रकट हुये और बत्तीस वर्ष की अल्पायु में सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का सन्देश दिया। आदि

शंकर ने चाण्डाल को भी गुरू मानने में संकोच नहीं किया। साथ ही व्यर्थ के कर्म काण्डों को छोड़कर राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना की।

भगवान बुद्ध के बाद चौरासी ''सिद्ध'' की (सन् 600-1100 तक। एक महान परम्परा हमें देखने को मिलती है। जो जातिगत भावों तथा व्यर्थ के कर्मकाण्डों में विश्वास नही करते थे। ब्रह्मण कुल में उत्पन्न आचार्य ''सिद्ध सरहवा'' नालन्दा विश्वविद्यालय में आचार्य थे और विलक्षण विद्वान थे। उन्होंने शूद्र महिला से विवाह करके, शूद्रों को अपना शिष्य बनाकर समाज में समरसता का भाव उत्पन्न करने का सतत् प्रयास करते रहें।

इस्लाम के आक्रमण के विरूद्ध संघर्ष के लिये नाथ योगी (सन् 1000-1600)आगे आये। महान योगी गोरखनाथ की शिष्य परम्परा के हजारो योगी साधु सम्पूर्ण देश में फैल गये। उन्होंने सभी जातिगत भेदभावों को तिरस्कृत करके उस समय बहिष्कृत कही जाने वाली अनेक जातियों को न केवल अपना शिष्य बनाया वरन् उन्हें धर्मान्तरण से भी रोका।

यह श्रृंखला निरन्तर आगे बढ़ती रही। श्री रामानुजाचार्य (सन् 1016-1137) ने शूद्र गुरूओं को श्रद्धा पूर्वक अपना गुरू स्वीकार किया। श्री रामानुजाचार्य ने आध्यात्म को नई परिभाषा दी और ईश्वर प्राप्ति हेतु ''सर्व प्रपत्ते अधिकरणे मत:'' अर्थात भक्ति को अधिकार सभी को है वह कर सर्वजन सुलभ-सरल मशि ''भक्ति'' के द्वार सबके लिये खोल दिये।

काशी के स्वामी रामानन्द तथा महाराष्ट्र के सन्त ज्ञानेश्वर ने अपने सहयोगी संतों एवं नाथ योगियों से मिलकर एक सन्त परम्परा खड़ी कर दी जिसमें सम्पूर्ण भारत वर्ष में एक कोने से दूसरे कोने तक भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ किया जिसके द्वारा समाज की सुरक्षा करने तथा समाज की कुरीतियों तथा बुराइयों के विरोध में एक आन्दोलन चल पड़ा।

इन संतो ने सभी के अन्दर एक ब्रह्म की प्रतीत करते हुए मानव- मानव के साथ भेदभाव करने वाली सभी बातों को मानने से इंकार कर दिया। सभी एक परमात्मा के अंश है। तब कौन बड़ा और कौन छोटा? कौन स्पृश्य और कौन अस्पृश्य? इस प्रकार से हीन भाव से ग्रसित हिन्दू समाज में एक नव-स्फूर्ति का संचार कर दिया।

काशी के स्वामी रामानन्द (1299-1448 सन्) ने जाति के महत्व को अस्वीकार कर कहा- ''जाति पाँति पूछे नही कोई, हरि को भजै सो हरि का होई'' उनके शिष्यों में संतकबीर दास, संत रैदास, संत धन्ना आदि तथा कथित पिछड़ी जाति से आये थे। जिन्होंने स्वामी रामानन्द की परम्परा को आगे बढ़ाया तथा समाज में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की।

इस्लाम के आक्रमणों को झेलने वाले पंजाब में महाराष्ट्र के सन्त नामदेव (सन् 1270-1350) ग्राम-ग्राम घूमते हुये भक्ति जागरण कर रहे थे। यह भक्ति जागरण आगे चलकर सिख संत परम्परा के रूप में प्रकट हुआ।

श्रीगुरूनानक देव (सन् 1469-1539) भगवत भक्ति के साथ संगत और पंगत तथा सामूहिक ठहरने की व्यवस्था का चलन प्रारम्भ किया और सामाजिक भेदभाव समाप्त कर दिया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की जाति विचार छोड़कर उसके अन्दर के ईश्वर का अनुभव करो।

गुरू गोविन्द सिंह (सन् 1699) में खालसा पंथ का गठन करके हिन्दू समाज के भेदभावों को समाप्त किया। खालसा पंथ ने इस्लाम के आक्रमण का भी उत्तर दिया।

स्वामी रामानन्द के शिष्यों में राजर्षि संत पीपा एवं संत धन्ना जाट ने राजस्थान में भक्ति जागरण का कार्य किया। मेवाड़ के राणा परिवार की कुलवधू मीरा ने संत रैदास (चर्मकार) को अपना गुरू स्वीकार कर लिया।

इसी प्रकार तमिलनाडु से भक्ति प्रवाह सम्पूर्ण देश में प्रवाहित हुआ। आलवार तथा नयनवार सन्तों ने अनेक शूद्र वर्ण के थे। किन्तु, अनेक ब्राह्मण सन्तों में उनका शिष्यत्व ग्रहण किया और अपने को धन्य माना।

'हरिबोल-हरिबोल' कहकर कीर्तन करने वाले बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने वनवासी, गिरिवासी, ग्रामवासी, नगरवासी चाण्डाल, ब्राह्मण आदि सभी को भक्ति के संकीर्तन में सराबोर कर दिया। उन्होंने संदेश दिया कि भक्ति में जाति और कुल का कोई विचार करना व्यर्थ है। इस प्रकार चैतन्य महाप्रभु ने अस्पृश्य कहे जाने वाले लाखो लोगों को अपने कृष्ण-भक्ति आन्दोलन से जोड़ा।

19 वीं शताब्दी मैं कोलकाता मन्दिर के पुजारी श्रीराम कृष्ण परमहंस अवतरित हुये और उन्होंने जातिगत भेदभाव समाप्त करने के लिये सन्यासियों की टोली तैयार की। उन्ही के शिष्य स्वमी विवेकानन्द ने पिछड़े, गरीब, अस्पृश्य कहे जाने वालों को ईश्वर का साक्षात् अवतार कहकर पुकारा।

इस प्रकार मनुष्य की सेवा को ही ईश्वर की सेवा मानने वाले सैकड़ो सन्यासी खड़े हो गये। इन सन्यासियों ने जातिगत विषमताओं तथा सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध निरन्तर संघर्ष किया।

आन्ध्र के श्रीकृष्णामाचार्य (सन् 1300; अन्नमाचार्य वीर ब्रहमेन्द्र स्वामी तथा सन्त वेमना आदि ने सभी को समान समझने की धारणा को ही बल दिया। जिससे समाज में समरसता एवं सद्भाव का प्रसार एवं प्रचार हुआ।

बंगाल के स्वामी प्रणवानन्द ने शूद्र परिवारों में जाकर भोजन करने में कोई संकोच नहीं किया अ 'भारत सेवक संघ' की स्थापना कर सैकड़ों सन्यासि को हिन्दू समाज के संस्कार हेतु लगाया।

असम के श्रीसंत शंकर देव (सन् 1449-156 एवं श्री माधवदेव ने कृष्ण भक्ति को अपने कार्य आधार बनाया तथा समाज की विषमताओं को दूर-क मूर्ति तथा मन्दिरों के स्थान पर ग्राम-ग्राम में 'नामध की स्थापना कर डाली।

इस प्रकार सम्पूर्ण देश में यह भक्ति आन्दो जटिल शास्त्र तथा वाह्य आडम्बरों जातिगत रूढ़ियों मुक्त एक साथ सभी काल खण्डों मे सम्पूर्ण देश व्याप्त होता रहा। आश्चर्य जनक बात यह रही प्रत्येक, प्रान्त, भाषा तथा जाति वर्णो में इन सन्तों उदय हुआ। देश को कोई भी भाग इस आन्दोलन अछूता नहीं रहा।

कन्याकुमारी से कश्मीर तक गुजरात महाराष्ट्र लेकर असम और मणिपुर की घाटियों तक में इस भ आन्दोलन का ज्वार उठ रहा था। और इस आन्दोलन तात्विक आधार "भगवत भक्ति तथा मानव प्रेम" था। साथ ही इन संतों ने सामाजिक कुरीतियों तोड़कर नई समाज व्यवस्था देने संकल्प लिया। मनुष्य-मनुष्य के बीच की भेद-भाव करने व प्रत्येक दीवार को ध्वस्त करने का प्रयास किया।

हिन्दू समाज की सभी जातियाँ, यथा महार, कु छापि, माली, धुनिया, चर्मकार, धोबी, बाल्मी कोरी, जुलाहा, सुनार, तेली, क्षत्रिय, वैश्य, ब्रा आदि जातियों के सन्त भक्ति भाव से आगे आये उन्हें व्यापक सम्मान मिला।

सम्पूर्ण देश में तीर्थ यात्रायें करते हुये ये संत भक्त देश की सांस्कृतिक एवं वैचारिक एकता अखण्डता को हजारो वर्षो से अक्षुण्ण बनाये रहे।

■■■

सामाजिक समरसता का प्रतीक
रामचरित मानस

अमरनाथ गोस्वामी
प्रबन्धक
स. वि. मं., केशवधाम, वृन्दावन

सामाजिक समरसता एक ऐसा विषय है जिसे ठीक प्रकार से क्रियान्वित करना आज समाज एवं राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता है। सामाजिक समन्वय के अग्रदूत गोस्वामी तुलसीदास जी ने पूर्व में ही जान लिया था कि आने वाले समय में समाज में परिस्थितियां कुछ इस प्रकार बदलेंगी कि व्यक्ति प्रेम, करूणा, नैतिकता, शील, क्षमा, ज्ञान आदि को धारण नहीं करेगा। इन गुणों को समाज में प्रसारित करने के लिये मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के चरित्र के माध्यम से जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं।

विपरीत परिस्थितियों में जीवन से हार मान लेने वाले निराश – हताश व्यक्तियों के लिये भगवान श्रीराम जी का जीवन एक प्रेरणास्रोत है। उनके जीवन में कई बार ऐसी विषम परिस्थितियां उत्पन्न हुई, जिनमें सामान्य व्यक्ति या तो निराश या हताश के गर्त में गिरकर अपना जीवन नष्ट कर लेता अथवा ईर्ष्या – क्रोध के वशीभूत होकर पारिवारिक तथा सामाजिक सदाचार एवं नैतिक मर्यादाओं का उल्लघंन कर बैठता है। लेकिन भगवान श्रीराम जी ने इन विपरीत परिस्थितियों में न केवल नैतिक एवं सदाचार की मर्यादाओं की प्रतिष्ठा की अपितु समन्वय तथा समरसता की भावना भी मजबूत की।

भरत व शत्रुधन जब श्रीराम व लक्ष्मण व सीता जी वनवास के लिये मंथरा दासी एवं कैकेयी के प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हैं, तब श्रीराम जी उन्हें भी शान्त करते हैं। परिवार में समरसता स्थापित करने का ऐसा कोई अन्य उदाहरण नहीं है। श्रीराम जी ने वनवास के दौरान उत्तर से दक्षिण तक विभिन्न जातियों व वर्गो के मध्य परस्पर प्रेम व विश्वास की भावना का संचार किया। निषादराज के यहाँ रूककर और उन्हें गले लगाकर भगवान श्रीराम जी ने सामाजिक समरसता का ही संदेश दिया है।

राम सप्रेम पुलकि उर लावा। परम रंक जनु पारसु पावा। मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ। मिलत धरे तन कह सबु कोऊ। कीन्ह निषाद दंडवत तेही। मिलेउ मुदित लखि राम सनेही। पिअत नमन पुट कपु पियूषा। मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा।

इतना ही नहीं शबरी के जूठे बेर खाकर प्रेम व स्नेह का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

समाज के पिछड़े, दलित, वंचित लोग भी सम्मान पूर्ण जीवन के अधिकारी हैं, यह शिक्षा श्रीराम के जीवन का आदर्श है। सामाजिक समरसता को स्थापित करते हुए ही रामचन्द्र जी ने राजधर्म का निर्वाहन जिस परिपक्वता से किया उसके कारण ही राम राज्य आज की एक आदर्श राज्य संकल्पना है। गुणवान व वीर्यवान होने के साथ भगवान श्रीराम धर्म व अर्थतत्व को भी जानते हैं। इसीलिए तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में केवट को श्रीराम द्वारा पारिश्रमिक देने की बात कही है –

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता। केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहीं कछु दीन्हा। पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी। कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई।।

सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए भगवान श्रीराम ने सदा न्याय का साथ दिया और अन्याय के विरूद्ध खड़े हुए। इसका सुन्दर उदाहरण बालिबध का प्रसंग है। बालि ने जब धर्म की दुहाई देते हुए श्रीराम जी के कार्य को अन्याय बताया जो उन्होंने उसकी बात का खंडन करते हुए कहा कि बालि तुम्हें तुम्हारे पाप का ही दण्ड मिला है। तुमने अपने छोटे भाई की स्त्री को जो तुम्हारी पुत्रवधू के समान है, बलपूर्वक रख लिया है। अत: तुम्हें दण्ड देकर मैंने राजधर्म, मित्रधर्म एवं प्रतिज्ञा का पालन किया है। इसी प्रसंग का वर्णन तुलसी दास जी ने रामचरित मानस में इस प्रकार किया है-

मै बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा। अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु शठ कन्या सम ए चारी। इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधें कछु पाप न होई। मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना।

अपने इन्हीं गुणों के कारण भगवान श्रीराम रीछ भालू और वानरों की सेना के संगठक सफल हुए। इतना ही नहीं उन्होंने अपने शरणागत रक्षा धर्म का पालन करते हुए रावण को छोड़कर आये उसके लघु भ्राता विभीषण को अपनाने में एक क्षण भी नहीं लगाया। इस के साथ ही भगवान श्रीराम जी कृतज्ञ भी हैं। मन पर नियन्त्रण होने के कारण वे दूसरों द्वारा किये गये अपराधों को भी भुला देते है। राज्याभिषेक के बाद हनुमान जी को विदा करते हुए कहते हैं - 'हे कपिश्रेष्ठ मुझपर तुम्हारे ऐसे उपकार हैं कि उनमें एक-एक के बदले अपने प्राण तक दे सकता हूँ। फिर भी शेष उपकारों के लिए मुझे तुम्हारा ऋणी बनकर ही रहना होगा।' रामचरित - मानस की निम्न चौपाइयों के माध्यम से तुलसीदास जी की अभिव्यक्ति इस प्रकार है-

परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारें। तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौ बड़ाई। ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे। अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही। सबमम प्रिय नही तुम्हहि समाना। वृथा न कहऊँ मोर यह बाना। सब के प्रिय सेवक यह नीति। मोरें अधिक दास पर प्रीति।

सामाजिक समन्वय को स्थापित करते हुए श्री रामचन्द्र जी ने राजधर्म का निर्वाहन जिस परिपक्वता से किया उसके कारण ही समराज्य आज की एक आदर्श संकल्पना है, जिसमें प्रजा में शारीरिक तथा भौतिक किसी भी प्रकार के कोई कष्ट नहीं थे। सद्भाव, सद्विचार तथा सद्भावना और परमार्थ ही परम लक्ष्य होने के कारण प्रजा में परस्पर प्रेम व स्नेह था। छोटे-बड़े, ऊँच-नीच को कोई भेदभाव नहीं था। आर्थिक विषमता नहीं थी। चोरी डकैती और दुराचार जैसे जघन्य अपराध नहीं होते थे।

अत: प्रजा सभी से सुख का अनुभव करती हुई धर्माचरण में निमग्न थी। इसलिए मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम आज भी जन-जन के नायक व आराध्य हैं। जिनके चरणों में भक्त अपना तन-मन-धन समर्पित करके इहलोक और परलोक को सफल बनाते है। भगवान श्रीराम जी के जीवन को यदि आज का युवा आदर्श मानकर चले तो आज भी रामराज स्थापित होने में कोई देर नहीं लगेगी। बस आवश्यकता है श्रीराम के जीवन के आदर्शो को आधुनिक जीवन शैली में अपनाने की जिससे निश्चित रूप से सामाजिक समरसता स्थापित हो सकेगी।

■■■

सिख पंथ का सामाजिक समरसता में योगदान

कैलाश चन्द्र अग्रवाल
(अवकाश प्राप्त -उत्पादन अभियन्ता रिफाइनरी)

मध्यकालीन भारत में जब भारत के लोग विदेशी सत्ता (मुगल-अंग्रेज) के आतंक कुरीतियों, धर्मान्तरण, ऊँच-नीच, रूढ़िवादिता, छुआछूत से ग्रसित थे, तब समय-समय पर संतों, समाज सुधारकों ने समाज को दिशा दी।

इस संत परम्परा में गुरुनानक जी का संगत, पंगत, सामूहिक ठहरने की गुरुद्वारा व्यवस्था, कबीर की विद्रोही वाणी और जाति-पाति, पाखण्डवाद पर प्रहार तुलसी का समाज चिन्तन व परिवार एवं समाज व्यवस्था, मीरा चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य, स्वामी दयानन्द, सहजानन्द, रैदास, नरसी मेहता, आदि ने भिन्न-भिन्न प्रकार से इस राष्ट्र व समाज को समरस व दृढ़ बनाने हेतु अपना सक्रिय योगदान दिया।

सिख समाज यानि गुरुनानक (प्रथम गुरु) से लेकर श्री गुरूगोविन्द सिंह (दशम गुरु) द्वारा समाज को दिया गया शक्ति और भक्ति का मंत्र एक अनुपम उदाहरण है।

गुरूनानक देव ने सभी जाति, समाज के लोग ऊंच-नीच को भूल एक साथ कैसे व्यवहार करें, इसके लिए व्यवहारिक व्यवस्थाएँ खड़ी की। जिनको आज भी समाज के लोग, संस्थायें, विभिन्न संगठन अपना रहे है। उन्होंने -

1. **संगत** - यानि सतसंग की व्यवस्था जिसमें सभी लोग बैठ कर सामूहिक भजन कीर्तन, चिन्तन, अपने पूर्व के संतों की वाणी ग्रंथों पर विचार मंथन करते हैं।

2. **पंगत** - लंगर, भण्डारे आदि के माध्यम से एक साथ छोटे-बड़े सभी लोग प्रसाद ग्रहण करते हैं। बिना भेदभाव के सामग्री जुटाने, बनाने और वितरण में अपना अपना योगदान सामर्थ्यानुसार करते हैं।

3. **सामूहिक आवास** - एक ऐसी व्यवस्था, जिसमें एक साथ लोग तम्बू शामियाना में रहते थे। बाद में उपरोक्त यह व्यवस्थाएं गुरूद्वारा के माध्यम से प्रचलित हुई।

4. **कारसेवा** - स्वयं अपने हाथों से बिना किसी संकोच के सभी प्रकार के कार्य करना जैसे - बर्तन साफ करना, श्रद्धालुओं के पदवेश साफ करना, सरोवरों की सफाई, परिसर की स्वच्छता आदि-आदि।

यह परम्परायें अभी तक चल रहीं हैं। समाज के लोग सेवा भक्ति समर्पण भाव से अपना-अपना योगदान देते हैं। कई बार तो ऊंचे पदों पर बैठे लोग भी इस प्रकार की कारसेवा करते हैं। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह भी कारसेवा कर चुके हैं।

नानकदेव ने पूर्व की परम्पराओं संतों, महापुरूषों के वचनो को ही अपने सत्संग का आधार बनाया। गुरूनानक देव जी कहते थे, प्रत्येक व्यक्ति महान है, मैं किसे ऊंचा या नीचा कहूँ। व्यक्ति कर्मो से महान या ऊंचा बनता है। उन्होंने कहा **'चारों वर्णों को एक कराऊं, सतिनाम का जाप कराऊं'** ईश्वर एक है, ओंकार स्वरूप है, हम सब उसके बन्दे (उपासक) हैं। 'मानव की जाति सभै एको पहिचानवै'।

आगे के सभी गुरूओं ने इन परम्पराओं को बढ़ाया और उनको अधिक दैदीप्यमान किया, इससे समाज में ऊंच-नीच का भेद भाव कम होकर समरसता का भाव बढ़ा।

■■■

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन
के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

नगर पालिका परिषद, वृन्दावन

जनता से अपील

- नगर को स्वच्छ रखने में पालिका का सहयोग करें।
- पेयजल का अपव्यय न होने दें।
- नगर पालिका के बकाया, भवन कर, जलकर का भुगतान समय से जमा करायें।
- कृपया पॉलीथिन का प्रयोग न करे।

उपलब्धियां

- सम्पूर्ण नगर में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया।
- श्रीधाम वृन्दावन के प्राचीन स्वरूप को संरक्षित करते हुए सम्पूर्ण नगर का विकास, प्रत्येक वा गली में सड़क, सीवर एवं शुद्ध पेयजल की व्यवस्था।
- नगर की सम्पूर्ण सफाई व्यवस्था, दुरूस्त करायी एवं नियमित रूप से कूड़ा उठाने का प्रबन्ध कि
- नगर के सभी मुख्य मार्गों, गलियों, वृन्दावन परिक्रमा मार्ग में प्रकाश की समुचित व्यवस्था करा
- पर्यावरण संरक्षण के लिए आश्रमों, मन्दिरों एवं विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के माध्य वृक्षारोपण कराया।
- नगर पालिका परिषद के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को फण्ड-पेंशन आदि का सम्पूर्ण भुगतान क गया।
- नगर पालिका परिषद वृन्दावन के कार्यालयों का आधुनिकरण तथा सभी रिकॉर्डो को ऑन कराया।
- नगर के विभिन्न क्षेत्रों में शौचालय का निर्माण कार्य।
- बेसहारा एवं असहाय हेतु रैन बसेरो का निर्माण कार्य।
- नगर पालिका परिषद के पार्को का सौन्दीयकरण एवं जीर्णोद्धार कराया गया।

मुकेश गौतम
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद, वृ

विशिष्ट सहयोगी

क्र. स.	नाम	पता	क्र. स.	नाम	पता
1.	श्री अशोक राना	आगरा	28.	श्री राकेश गर्ग	आगरा
2.	श्री अशोक अग्रवाल	आगरा	29.	श्री राज कुमार चाहर	आगरा
3.	श्री अनुराग गोयल	मथुरा	30.	सी.ए. श्री संजीव माहेश्वरी	आगरा
4.	श्री अशोक पिप्पल	मथुरा	31.	श्री श्याम भदोरिया	आगरा
5.	श्री अशोक आहूजा	आगरा	32.	श्री संजय अग्रवाल	आगरा
6.	श्री बसन्त कुमार गुप्ता	आगरा	33.	श्री स्वदेश वर्मा	आगरा
7.	श्री बच्चू सिंह सोलंकी	आगरा	34.	श्री सोनू बंसल	आगरा
8.	राम किशन अग्रवाल	वृन्दावन	35.	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल	आगरा
9.	श्री बाबूलाल चौधरी (सांसद फतेहपुर सीकरी)	आगरा	36.	श्री सुधीर गर्ग	आगरा
10.	श्री भूपेन्द्र कुमार वर्मा	आगरा	37.	सी.ए. सर्वेश कुमार वाजपेयी	आगरा
11.	श्री चन्द्रमोहन सचदेवा	आगरा	38.	श्री सुशील चौहान	आगरा
12.	श्री छोटेलाल बंसल	आगरा	39.	सी.ए. संजय अग्रवाल	आगरा
	श्री महेश अग्रवाल	आगरा	40.	सी.ए. उमेश कुमार गर्ग	आगरा
13.	श्री दिलीप गुप्ता	आगरा	41.	श्री उमेश कंसल	आगरा
14.	श्री दिनेश चन्द्र अग्रवाल	आगरा	42.	श्री विजय शिवहरे	आगरा
15.	श्री हरिबाबू अग्रवाल	आगरा	43.	श्री विनीत अग्रवाल	आगरा
16.	श्री जगन गर्ग (विधायक)	आगरा	44.	श्री विवेक अग्रवाल	आगरा
17.	श्री लोकेन्द्र अग्रवाल	आगरा	45.	श्री विनय अग्रवाल	आगरा
18.	श्री मुकेश बाबू अग्रवाल	आगरा	46.	श्री विपिन कुमार 'मुकुट वाले'	वृन्दावन
19.	श्रीमती मंजू लता जी	मथुरा	47.	श्री वीरेन्द्र अग्रवाल	आगरा
20.	श्री मुरारी प्रसाद अग्रवाल	आगरा	48.	श्री विजय दत्त पालीवाल	आगरा
21.	श्री मुकेश पाल	आगरा	49.	श्री धमेन्द्र जैन	आगरा
22.	श्री मनोज गुप्ता	आगरा	50.	श्री मानवेन्द्र प्रताप सिंह	फिरोजाबाद
23.	श्री मुकेश जौहरी	आगरा	51.	श्री दिनेश बंसल	आगरा
24.	श्री नितेश अग्रवाल	आगरा	52.	श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल	वृन्दावन
25.	श्री नरेन्द्र अग्रवाल	मथुरा	53.	श्री राजेश अग्रवाल	आगरा
26.	श्री प्रवीन अग्रवाल	आगरा	54.	श्री राधाबल्लभ अग्रवाल	आगरा
27.	श्री प्रमोद गुप्ता	आगरा	55.	श्री निवास यादव	आगरा
			56.	श्री चौधरी भीमसेन	आगरा

क्र. स.	नाम	पता	क्र. स.	नाम	पता
57.	श्री मुकेश जैन	आगरा	85.	श्री सुरेश कुशवाह	आगरा
58.	श्री घनश्याम अग्रवाल	आगरा	86.	श्री राजेश मिश्रा	आगरा
59.	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल	आगरा	87.	श्री विमल चन्द जैन	आगरा
60.	श्री अभय गुप्ता	आगरा	88.	श्री राकेश कुमार गुप्ता	आगरा
61.	श्री रवीन्द्र गुप्ता	आगरा	89.	श्री विकास जैन	आगरा
62.	श्री पूरन डाबर	आगरा	90.	श्री रमाशंकर अग्रवाल	आगरा
63.	श्री प्रहलाद अग्रवाल	आगरा	91.	श्री पवन अग्रवाल	आगरा
64.	श्री महेश कुमार गोयल (विधायक)	आगरा	92.	श्री कृष्ण गोपाल शर्मा	आगरा
65.	श्री नरेन्द्र बंसल	आगरा	93.	कर्नल विजय सिंह तौमर	आगरा
66.	श्री रोहित अग्रवाल	आगरा	94.	श्री निर्मल कुमार जैन	आगरा
67.	श्री निरंजन पालीवाल	आगरा	95.	श्री गोयल इन्फोर्मेटिव	आगरा
68.	श्री संदीप मित्तल	आगरा	96.	श्री संजीव कंसल	गाजियाबाद
69.	श्री अंकुर जैन	आगरा	97.	श्री नरेन्द्र सिंघल	आगरा
70.	श्री नवीन जैन	आगरा	98.	श्री प्रमोद गुप्ता	आगरा
71.	श्री शशिकांत शर्मा	आगरा	99.	श्री राजेश कुमार अग्रवाल	आगरा
72.	श्री राजेश हेमदेव	आगरा	100.	श्री पराग जैन	आगरा
73.	श्री चौ॰ यशपाल सिंह	आगरा	101.	श्री खेम चन्द गोयल	आगरा
74.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	आगरा	102.	श्री पवन अग्रवाल	आगरा
75.	श्री आलोक गर्ग	आगरा	103.	श्री आशीष अग्रवाल	आगरा
76.	श्री सोम कुमार मित्तल	आगरा	104.	श्री अमित सिंह	आगरा
77.	श्री मुन्नालाल गर्ग	आगरा	105.	श्री अशोक जैन	आगरा
78.	श्री अमित अग्रवाल	आगरा	106.	श्री सन्तोष कुमार शर्मा	आगरा
79.	श्री विकास अग्रवाल	आगरा	107.	श्री शान्ती स्वरूप गोयल	आगरा
80.	श्री मनमोहन चावला	आगरा	108.	श्री विजय कुमार सिंघल	आगरा
81.	श्री हेमेन्द्र अग्रवाल	आगरा	109.	श्री राकेश कुमार गोयल	आगरा
82.	श्री सुदीप गर्ग	आगरा	110.	श्रीमती रंजना गुप्ता	आगरा
83.	श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल	आगरा	111.	श्री अखिल बंसल	आगरा
84.	श्री देवेश कुमार वाजपेयी	आगरा			

एक बार स्वामी जी किसी कुएँ पर पानी पीने गये। पानी निकालने वाले व्यक्ति ने उन्हें कहा - ''महाराज आप ब्राह्मण दिखाई दे रहे हैं। मैं अछूत हूँ। मैं आपको पानी कैसे पिलाऊं?'' स्वामी विवेकानन्द ने कहा, ''तो इससे क्या हुआ? राम नाम से पत्थर भी तर गए, तू तो मनुष्य है। राम का नाम ले और पानी पिला।'' उसने राम का नाम लिया और स्वामी जी को पानी पिलाया।

केशव धाम समिति

क्र.	नाम	पद	घर का पता	मो. नं.
1.	मा. सरकार्यवाह	संरक्षक		
2.	श्री नारायण दास अग्रवाल	कार्यकारी अध्यक्ष	वृन्दावन	09997979444
3.	श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल	मंत्री	आगरा	09319069105
4.	श्री मोर मुकुट	सहमंत्री	मथुरा	09416026933
5.	श्री पराग गोयल	कोषाध्यक्ष	वृन्दावन	09412281300
6.	श्री ललित कुमार	निदेशक	केशव धाम, मथुरा	09412784833
7.	श्री दिनेश चन्द्र	सदस्य	दिल्ली	011-23670365
8.	श्री रामलाल	सदस्य	दिल्ली	011-23382234
9.	सी.ए. प्रमोद सिंह चौहान	सदस्य	आगरा	09837021609
10.	श्री पीयूष राघव	सदस्य	मथुरा	09760026820
11.	श्रीमती मिथलेश अगरिया	सदस्य	एटा	09412861504
12.	श्री चन्द्रमोहन सचदेवा	सदस्य	आगरा	09837026388

चिकित्सालय समिति

क्र.	नाम	पद	घर का पता	मो. नं.
1.	श्री लालचन्द्र वासवानी	संरक्षक	58 ए, गोविन्द नगर, मथुरा	9557677100
2.	श्री महेश खंडेलवाल	अध्यक्ष	1, आनन्द बिहार रमणरेती, वृन्दावन, मथुरा	9837022973
3.	श्री अनुराग गोयल	मंत्री	साकेत 1/3, निकट एच. डी.एफ.सी. बैंक रमणरेती वृन्दावन, मथुरा	9412281400
4.	श्री वैभव अग्रवाल	सदस्य	लोई बाजार, गोविन्द बाग, वृन्दावन मथुरा	9412470260
5.	श्री ओमप्रकाश गुप्ता	सदस्य	2ए/ 252, कृष्ण बिहार, हनुमान बगीची के पीछे, बी.एस.ए. इन्जी॰ कालेज मथुरा	9412286403
6.	श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल	सदस्य	कदम विहार, स्वर्ण जयन्ती हास्पीटल के पीछे, मथुरा	9411854321
7.	श्रीमती वर्तिका गोयल	महिला प्रमुख	200/3 साकेत, एच.डी.एफ.सी. के बराबर गली में रमणरेती, वृन्दावन	9897958455
8.	श्रीमती श्यामलता अग्रवाल	सदस्य	भक्ति भवन, 190 दुसायत मौहल्ला, अकोला वाली धर्मशाला के पीछे, वृन्दावन	9358175149
9.	डॉ॰ कैलाश द्विवेदी	चिकित्सक	प्राकृतिक चिकित्सा एवम् योग संस्थान, केशवधाम, वृन्दावन	9760897937

छात्रावास समिति

क्र.	नाम	पद	घर का पता	मो. नं.
1.	श्री बलराम बाबा	संरक्षक	वृन्दावन	
2.	श्री महेश अग्रवाल (प्रेस वाले)	अध्यक्ष	मथुरा	9412278759
3.	श्री बद्री खण्डेलवाल	उपाध्यक्ष	मथुरा	9412280635
4.	श्री अनिरूद्ध जी गोयल	मंत्री	मथुरा	9719202720
5.	श्री रवि अग्रवाल	कोषाध्यक्ष	मथुरा	9756461881
6.	श्री माधव गोयल	सदस्य	मथुरा	9027353677
7.	श्री शुवेन्दु अग्रवाल	सदस्य	मथुरा	8006399067
8.	श्री अजय शर्मा	सदस्य	मथुरा	9410041008
9.	श्री यशवंत जी	सदस्य	मथुरा	8006399061
10.	श्री बल्देव जी	सदस्य	मथुरा	9412280755
11.	श्री मयंक कक्कड़	सदस्य	मथुरा	8958746460
12.	डॉ॰ भरत अग्रवाल	सदस्य	वृन्दावन	9412353777

वेद विद्यालय समिति

क्र.	नाम	पद	घर का पता	मो. नं.
1.	श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री जी (ठाकुर जी)	संरक्षक	रमणरेती मार्ग, वृन्दावन, मथुरा	989771992
2.	श्री अतुल कृष्ण जी महाराज	संरक्षक	राधापुरम स्टेट, आगरा दिल्ली हाइवे, मथुरा	9412240139
3.	डॉ॰ मनोज मोहन जी शास्त्री	अध्यक्ष	श्रीनाम धाम, गांधीमार्ग, वृन्दावन मथुरा	9412278461
4.	श्री कपिल देवाचार्य	उपाध्यक्ष	वृन्दावन	9927455453
5.	श्री सौरभ गौड़	मंत्री	58, लक्ष्मी निकुंज, रमणरेती, वृन्दावन, मथुरा	9837164790
6.	श्री रसिक बल्लभ	कोषाध्यक्ष	वृन्दावन	9897664201
7.	श्री पावस राठौर	सदस्य	कृष्णा नगर, मथुरा	9119732222
8.	श्री कन्हैयालाल गोस्वामी	सदस्य	कीर्ति कुंज, वृन्दावन, मथुरा	9837002132
9.	श्री कन्हैयालाल गोस्वामी (प्रधा.)	सदस्य	जंगल कुट्टी, वृन्दावन, मथुरा	9837116248

विद्यालय प्रबंध समिति

क्र.	नाम	पद	घर का पता	मो. नं.
1.	प. पू. स्वामी अर्चिकानन्द	संरक्षक	श्रोत मुनि, वृन्दावन (मथुरा)	09412885244
2.	श्री सुरेश सिंह	अध्यक्ष	बाबा कढ़ेरा सिंह स.वि.म. सौंख गोबर्धन रोड, अक्ख मथुरा	07417553055
3.	श्री महेशचन्द्र खण्डेलवाल	उपाध्यक्ष	1 आनंन्द बिहार कालौनी रमणरेती वृन्दावन (मथुरा)	09837022973
4.	श्री अमरनाथ गोस्वामी	प्रबन्धक	128 बिहारी पुरा, वृन्दावन (मथुरा)	09927473710
5.	श्री बच्चू सिंह	कोषाध्यक्ष	5 चैतन्य बिहार, फेस-1 राधेधाम के सामने वृन्दावन मथुरा	09837006546
6.	श्री महेश चन्द्र किलानोत	सदस्य	प्लाट नं. 11, कृष्ण वाटिका, चैतन्य बिहार फेस-1 वृन्दावन	09837041190
7.	श्री दर्शन लाल	सदस्य	116, चैतन्य बिहार फेस-1 वृन्दावन, (मथुरा)	09997288904
8.	श्री घनश्याम गोस्वामी	सदस्य	बिहारी पुरा, वृन्दावन (मथुरा)	09837268384
9.	श्री ऋषि कुमार वार्ष्णेय	अभिभावक प्रतिनिधि	401, चैतन्य बिहार फेस-1, वृन्दावन (मथुरा)	09319881777
10.	श्री नवल यादव	अभिभावक प्रतिनिधि	बुर्जा, वृन्दावन (मथुरा)	9927081406
11.	श्री पराग गोयल	प्रान्तीय प्रतिनिधि	200/3, सांकेत, नि.-एच.डी एफ.सी. बैंक, रमणरेती वृन्दावन	09412281300
12.	श्री बृजवल्लभ शर्मा (प्रधानाचार्य)	पदेन सदस्य	बी. 13 डिफेन्स कालौनी, मथुरा	08445478577

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

लोक हितम् मम करणीयम्
केशवधाम

विद्याभारती द्वारा संचालित
(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (C.B.S.E.) नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त)

सरस्वती विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल

मान्यता क्रमांक 2131244

केशवधाम, केशव नगर, वृन्दावन (मथुरा)
मोबाइल - 9058590582, 9837346949, 8410641400, 9084148840
ई-मेल- svmkd.vbn83@yahoo.in | svmkeshavdhamvbn@gmail.com वेबसाइट - svm.keshavdham.com

विद्या भारती

विद्यालय कोड 54725

विशेषताएं

1. कक्षा अरुण से द्वादश तक (विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग) छात्र एवं छात्राओं की अलग-अलग शिक्षण व्यवस्था।
2. मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त IT Vocational शिक्षण।
3. बोर्ड परीक्षाओं में शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम। 4. राष्ट्रीय एवं S.G.F.I. तक छात्र-छात्राओं का चयन।
5. CBSE मानकों पर आधारित भव्य एवं सुसज्जित भौतिकी, रसायन विज्ञान, कम्प्यूटर एवं जीव विज्ञान प्रयोगशालायें।

लोक हितम् मम करणीयम्

केशवधाम

समरसता विशेषांक

केशव प्रभा

हिन्दी षट्मासिक

शरद कालीन अंक - **त्वचा रोग विशेषांक** के लिए रचनाएं आमंत्रित हैं -

1. प्राकृतिक चिकित्सा, योग, आयुर्वेद से संबंधित रचनाएं भेजें।
2. लेख फुल साइज के कागज पर एक ओर सुलेख में अपेक्षित है।
3. लेख Kruti Dev 10 या AAText Font में टाइप करके ई-मेल पर भेज सकते हैं।
4. CD या हस्तलिखित लेख डाक द्वारा भेजे जा सकते हैं।
5. लेख प्रकाशित न होने की स्थिति में पत्राचार संभव नहीं है।
6. लेख प्रकाशित होने पर पत्रिका उचित माध्यम से रचनाकार के पते पर भेजी जाएगी।
7. रचना के साथ अपना नाम, पता, फोटो व मोबाइल नम्बर अवश्य भेजें।
8. प्रकाशित लेख पर कोई पारिश्रमिक देय नहीं है।

आलोक - पत्रिका से संबंधित आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

केशव प्रभा परिवार की ओर से दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनायें

'केशव प्रभा' अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन
के अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें

केशव होम्योपैथी चिकित्सालय

केशवधाम, केशव नगर, वृन्दावन जिला मथुरा

मो. 7088006633

वृक्ष के समान भारी-भरकम बढ़ने से या सौ दो सौ वर्षो तक जीने के बाद अन्त में शुष्क, पर्णहीन और म्लान होने वाले ओक वृक्ष के समान जीवन बिताने से मानव श्रेष्ठ नहीं बनता है। 'लिली' का फूल मई में एक दिन के लिए खिलकर संध्या को झर जाता है। फिर भी उस पौधे और पुष्प का जीवन उज्जवल है। जीवन की सार्थकता अधिक समय तक जीने में नहीं, वरन् उच्चतम आदर्शो के साथ जीने में है।

दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लि0

(उ0प्र0 सरकार का उपक्रम)

CIN: U31200UP2003SGC027460

मुख्य ध्येय

"सबका साथ सबका विकास"

"बेहतर विद्युत वितरण एवं उपभोक्ता सेवा"

लक्ष्य :-

- दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लि0 के अन्तर्गत सभी घरों हेतु विद्युत तंत्र का निर्माण एवं 24 घण्टे विद्युत की उपलब्धता।
- बी0पी0एल0 कार्ड धारकों को निशुल्क विद्युत संयोजन दिया जाना।
- ए0पी0एल0 कार्ड धारकों को किस्तों में शून्य धनराशि के साथ विद्युत संयोजन दिया जाना।
- गरीब घरेलू उपभोक्ताओं को प्रथम 100 यूनिट, रु0 3 प्रति यूनिट की दर से विद्युत की आपूर्ति।
- सभी टाउन एरिया/नगर निगम का आई0पी0डी0एस0 योजना के अन्तर्गत विद्युत तंत्र का सुदृणीकरण।
- विभिन्न योजनाओं में 217 नग, 33/11 के0वी0 उपकेन्द्रों का निर्माण करना।
- डी0डी0यू0जी0जे0वाई0 के अन्तर्गत निजी नलकूप एवं ग्रामीण 11 के0वी0 फीडरों को पृथक करना एवं शेष अविद्युतीकृत ग्रामों एवं मजरों का विद्युतीकरण करना।
- वर्ष 2019 तक उ0प्र0 सरकार के संकल्प "पावर फार ऑल" को पूर्ण करना।

"एल0ई0डी0 बल्ब का प्रयोग कर ऊर्जा संरक्षण से
राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान करें"

R K Industries
A unit of SRCIL

M: +91 - 9917464443
Fax : 0581 - 2561015
Off.: 0581 - 3290375

R K INDDUSTRIES

(A Unit of S R Chaddha Industries Ltd.)

We Deals in :

Supply of Distribution / Power Transformers of 10 KVA to 10 MVA

Manufacturing of PCCP Pole 8.5 Mtr. / 9Mtr.

Factory : Swaley Nagar, Rampur Road, Bareilly (U.P.)
Corp. Off.: 147, Civil Lines, ICICI Bank Bareilly (U.P.)
Tel.: 0581 - 2560070, **Fax :** +91 - 581 - 2561015
E-mail: rkindustriesbly@rediffmail.com
Web.: www.SRCILGROUP.COM

Mittal # 9568776000